

matter of fact, the Constitution has given that privilege to us that whatever we speak in this House, the public at large cannot bring criminal case against us, cannot bring civil case against us. That protection is given. But that protection is given to me also that I must protect 140 crore people. You cannot say anything and everything here, Tiruchi ji. You have to say something keeping in view dignity of your office as a Member of Parliament and facts that are unimpeachable, beyond question. Therefore, if Sanjay Singh has made reference to a judgement which has been stayed, which means that judgement, till the judgement of the upper court comes, is non-existent. Therefore, Sanjay, you cannot take reference to that. Go ahead. Make your point.

MOTION OF THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS- *Contd.*

श्री संजय सिंह: सर, फिलहाल तो आपका प्रोटेक्शन चाहिए।

श्री सभापति: मिलेगा।

श्री संजय सिंह: मान्यवर, आपका संरक्षण चाहिए।

श्री सभापति: बोलिए, क्या चाहिए?

श्री संजय सिंह: मान्यवर, आपने बिल्कुल ठीक कहा कि वह मामला हाई कोर्ट से स्टे हो गया है। मैं यह मानता हूँ और मैं अगली बात यही कहने जा रहा था। लेकिन मान्यवर, वह स्टे किन परिस्थितियों में हुआ? भारत के न्यायपालिका के इतिहास में पहली बार बगैर ट्रायल कोर्ट के ऑर्डर की कॉपी के स्टे हुआ है। यह स्टे हाई कोर्ट से हुआ है, जब कि ट्रायल कोर्ट के ऑर्डर की कॉपी नहीं थी और स्टे कर दिया गया।

श्री सभापति: सुनिए। ...(व्यवधान)... बैठिए, बैठिए। माननीय सदस्यगण, आप लोगों से मेरा अनुरोध है, and we have a distinguished Senior Advocate Bikash Ranjan Bhattacharyya ji also there, that we cannot discuss conduct of a judge in the manner he has given his order. Therefore, you are directly questioning a judge saying that he has passed an order without the judgment of the trial court. You are saying that. No details on it. I tell you that judges in their wisdom pass orders on a Sunday. Judges in their wisdom pass orders at midnight. Judges in their wisdom pass orders without even an order of the trial court. Therefore, keep away from this issue. Confine to the other part of it. Please go ahead.

श्री संजय सिंह: मान्यवर, अमृतकाल की चर्चा हुई। विपक्ष के नेताओं को पूरे देश में सरकार के द्वारा टारगेट किया गया। सिर्फ विपक्ष के नेताओं का सवाल नहीं मान्यवर, बंगाल के तीन मंत्री भी जेल में हैं। अभी झारखंड के मुख्य मंत्री को कोर्ट से जमानत मिली है और बिहार में जांच एजेंसियों का दुरुपयोग, महाराष्ट्र में जांच एजेंसियों का दुरुपयोग, दिल्ली में जांच एजेंसियों का दुरुपयोग, आप क्या करना चाहते हैं?

मान्यवर, मैंने अटल जी के भाषण सुने। उन्होंने कहा, दुर्भावना से राजनीति नहीं होती, बड़े दिल से राजनीति होती है, बड़े मन से राजनीति होती है। बड़े मन की राजनीति करना सीखिए। ऐसे विपक्ष के लोगों को टारगेट करना ठीक नहीं है। यह आपकी अच्छी राजनीति नहीं है। आपने दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री को जेल में डाल दिया। मान्यवर, उस आदमी का 36 किलो वजन जेल में कम हो गया है। 36 किलो! ...(व्यवधान)...आप इनकी टीका-टिप्पणी सुन रहे हैं? हमारे दिल्ली के मुख्य मंत्री...

श्री सभापति: संजय जी, एक सेकंड।

श्री संजय सिंह: फिर तो मैं बोल नहीं पाऊंगा, सर।

श्री सभापति : संजय जी, जो व्यक्ति जेल में है, उसको जेल में किसने डाला है?

श्री संजय सिंह: इनकी जांच एजेंसियों ने, सर।

श्री सभापति: न्यायालय ने।

श्री संजय सिंह: इनकी जांच एजेंसियों ने *मामले बनाकर। ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: नहीं, न्यायालय ने। भारतवर्ष दुनिया के अंदर वह देश है, जिसकी न्यायपालिका सुदृढ़ है। ...(व्यवधान)...

श्री संजय सिंह : मैं अपनी बात करूं, सर?

MR. CHAIRMAN: I will give extra time. Problem with Mr. Saket Gokhale is...(Interruptions)...

श्री संजय सिंह: सर, अगर मुझे एक मिनट में तीन बार बिठाया जाएगा तो मैं कैसे बोल पाऊंगा?

श्री सभापति: अब ऐसा करेंगे, आप बोलते रहिए।

* Expunged as ordered by the Chair.

श्री संजय सिंह : ठीक है, सर।

मान्यवर, मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूँ कि दुर्भावना की राजनीति बंद कीजिए। अगर आपको भारत के लोकतंत्र को मजबूत बनाना है, भारत के संविधान को मजबूत बनाना है, तो सत्ता पक्ष का भी महत्व है, प्रतिपक्ष का भी महत्व है। प्रतिपक्ष को खत्म करके, विपक्ष को खत्म करके, नेताओं को जेल में डालकर आपको कोई लाभ होने वाला नहीं है। पता नहीं, कौन आपको सलाह देता है, किस गलतफहमी में आप लोग रहते हैं? मैं आपके लिए भी कह रहा हूँ और इधर जो बैठे हैं, उनके लिए भी कह रहा हूँ। जब जो पार्टी सत्ता में रहेगी, अगर विपक्ष के लोगों को जेल में डालेगी, तो उस पार्टी का * होगा, अपने नेताओं को आप बता देना। आप अपने नेताओं को बता देना, इस गलतफहमी में मत रहना। आप जेल की राजनीति कर रहे हैं! इस चुनाव ने आपको एक परिणाम दिया है, सोचने के लिए, विचार करने के लिए। मान्यवर, इसमें स्पष्ट बहुमत का भी जिक्र है।...(व्यवधान)... स्पष्ट बहुमत कहां है? आपने नारा दिया - 400 पार, 400 पार, 400 पार।...(व्यवधान)...

MR. CHAIRMAN: Mr. Nagar, this is not a good habit. ...(Interruptions)...

श्री संजय सिंह: आपने 400 पार का नारा दिया, आपकी 240 सीटें आईं, स्पष्ट बहुमत कहां है? आपके दावे से 160 सीटें कम आईं। पिछली बार 303 सीटें थीं, उससे 63 सीटें कम आईं। 272 का बहुमत होता है, उससे 32 सीटें कम आईं। आपको सोचना होगा, विचार करना होगा, अपनी कमियों की समीक्षा करनी होगी। आपकी कमियां क्या हैं? आपकी कमियां आपका अहंकार है। मान्यवर, जब व्यक्ति अहंकार में होता है, तो उसको कुछ दिखाई नहीं पड़ता है। रावण भी अहंकार में था। उसे लगा प्रभु श्री राम, वनों में रहने वाले, जंगलों में रहने वाले, वे मेरा क्या बिगाड़ पाएंगे? लेकिन भालुओं और बंदरों की सेना बनाकर लंका को आग लगाने का काम प्रभु श्री राम ने किया, रावण का नाश करने का काम प्रभु श्री राम ने किया। उस अहंकार का भी नाश होगा। पता नहीं क्यों आप रिज़ल्ट को समझ नहीं पा रहे? *

MR. CHAIRMAN: Deleted, expunged.

श्री संजय सिंह: *

MR. CHAIRMAN: This is expunged.

श्री संजय सिंह: * मान्यवर, अयोध्या की हालत बताता हूँ। अयोध्या के विकास के लिए इन्होंने कितना पैसा खर्च किया है, वह मैं बता रहा हूँ।

श्री सभापति : आप एक मिनट मेरी बात सुनिए।

Expunged as ordered by the Chair.

श्री संजय सिंह: सर, आप मुझे मत रोकिए। सर, अगर आप बार-बार मुझे रोकेंगे तो मैं बोल नहीं पाऊंगा।

श्री सभापति: आपने जाटों का भी नाम ले लिया। मेरा लिहाज भी नहीं किया। कोई गाली नहीं दी गई, कोई भी गाली नहीं दी गई है। आप इतना असत्य बोल रहे हैं।

श्री संजय सिंह: सर, आपका नाम नहीं लिया है।

श्री सभापति: मेरा नाम नहीं लिया, लेकिन एक समाज के बारे में ऐसे नहीं कहना चाहिए। You are a senior Member. You have your second term. आप पार्टी के नेता हैं। जैसे आपने नतीजों का आकलन कर दिया, तो कहेंगे कि आप अपने नतीजों को भी देखिए। लोक सभा चुनाव में आपके भी नतीजे आए हैं। आए हैं या नहीं आए हैं?

श्री संजय सिंह: सर, वे बोलेंगे, उनका मौका लगेगा तो वे भी बोलेंगे। सर, लोकतंत्र में यह अच्छी चीज़ है, हमारे रिजल्ट गड़बड़ आएंगे तो हम समीक्षा करेंगे, आपका रिजल्ट गड़बड़ आया है, तो आप समीक्षा कीजिए। आप तो कुछ मानने को तैयार नहीं हैं।

सर, अयोध्या के इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट में - हमारे मित्र जब यहां बोल रहे थे, कल जब इनका भाषण मैंने सुना तो ये कह रहे थे कि इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट में भारत नंबर वन है। मैं इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट के बारे में बताता हूं। मान्यवर, इन्होंने अयोध्या के विकास में बहुत पैसा खर्च किया, जो होना चाहिए। प्रभु श्री राम की नगरी का विकास करने में एयरपोर्ट पर 1,450 करोड़ रुपए, रेलवे स्टेशन पर 724 करोड़ रुपए, अयोध्या रिंग रोड पर 4,793 करोड़ रुपए, चौदह कोसी परिक्रमा पर 1,140 करोड़ रुपए, पंच कोसी परिक्रमा पर 773 करोड़ रुपए, राम पथ पर 787 करोड़ रुपए, टाउनशिप पर 2,180 करोड़ रुपए, पुराने मंदिरों के जीर्णोद्धार पर 170 करोड़ रुपए, मेडिकल कॉलेज पर 245 करोड़ रुपए - मान्यवर, यह पैसा गया कहां? *

MR. CHAIRMAN: This is deleted.

श्री संजय सिंह: *

श्री सभापति: आप सुनिए। Hon. Members, please. ...(Interruptions)... Mr. Sanjay Singh, please take your seat. ...(Interruptions)... Nothing will go on record. ...(Interruptions)... Can you take your seat? ...(Interruptions)... Please take your seat. ...(Interruptions)... Mr. Neeraj, please. ...(Interruptions)... I will urge leaders of parties to keep their Members under control. Hon. Member, you have made a reflection which is wrong. You make a reflection because someone has said

* Expunged as ordered by the Chair.

something. When I got this news, I verified it and got it from responsible people. You should have real documentary evidence when you are speaking as a Member of Parliament; you cannot give a speech as you give outside. It is not so. Let us not run down our institutions. It is a temple worshipped all over the world. Do you know for how many years it will last? Are you aware of the technology that has gone there? When I went to Ayodhya, there was a presentation by the technical people. We must appreciate it. Merely because someone has said so, you take it as a gospel truth. Make an effort to find out. I would not encourage the sensation. ...(*Interruptions*)...

श्री संजय सिंह: इस अमृतकाल के दौरान देश में तमाम घटनाएं घटित हुई हैं। अग्निवीर जैसी योजना देश के अंदर आई, जिसमें चार साल की नौकरी की योजना है, यानी 17 साल में एक जवान सेना में भर्ती होगा और 21 साल में रिटायर हो जाएगा। मैं ऐसा मानता हूँ कि इस योजना के बारे में सरकार को पुनर्विचार करना चाहिए। इसको लेकर नौजवानों में प्रतिरोध है, गुस्सा है और कहीं न कहीं यह भारत की सेना को भी कमजोर करने की कार्रवाई है। अगर आप कारगिल के युद्ध को देखें और उसके पहले भी सेना के अधिकारियों से बात करेंगे, तो पांच साल तक जब कोई जवान फील्ड में काम कर लेता है, उसके बाद उसको युद्ध की स्थिति में इस्तेमाल किया जाता है, उसको आगे किया जाता है। इसलिए यह अग्निवीर योजना कहीं न कहीं भारत माता की सुरक्षा के साथ समझौता करने की कोशिश है, तो उस पर भी आपको पुनर्विचार करना चाहिए और इस योजना को वापस लेना चाहिए।

महोदय, दूसरी बात यह है कि आपने बात की कि आप दुनिया में पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गए। यह बहुत अच्छी बात है। मैं आपको शुभकामनाएं देता हूँ। भारत को दुनिया की पहली नंबर की अर्थव्यवस्था बनाइए, हम सब खुश होंगे, लेकिन इसके साथ-साथ प्रति व्यक्ति आय के मामले में आप कहां खड़े हैं? मैं बताता हूँ कि आप 141वें नंबर पर खड़े हैं। यह पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था किसके लिए है, चंद पूंजीपतियों के लिए है, जिनका लाखों-करोड़ों रुपये बैंक का कर्जा माफ किया गया। यह किसके लिए है?

महोदय, चुनाव के दौरान हमने एक भाषण और सुना। जिसमें कहा गया कि आपकी संपत्ति लेकर ये भाग जाएंगे, वे भाग जाएंगे। संपत्ति कौन-कौन लेकर भागा है, यह तो सर्वविदित सत्य है। सर, 20 हजार करोड़ रुपये लेकर नीरव मोदी भाग गया, 10 हजार करोड़ रुपये लेकर विजय माल्या भाग गया, 3 हजार करोड़ रुपये लेकर ललित मोदी भाग गया। ये बड़े-बड़े पूंजीपति कौन हैं? सर, दूसरे सदन में इनका दिया गया जवाब है, तो मैं आपके माध्यम से चाहूंगा कि सरकार को इसका जवाब जरूर देना चाहिए और यदि मैं गलत हूँ, तो ये उसके बारे में मेरे साथ बहस कर सकते हैं, जो प्रस्ताव लाना हो, ला सकते हैं। यह सर्वविदित सत्य है कि 3,53,655 bank settlements 43 कंपनियों के माफ किए गए। इसका रिकॉर्ड मैं आपके सामने रख दूंगा। सर, संपत्ति कहां पहुंचा रहे हैं, किसको पहुंचा रहे हैं, किसलिए आप काम कर रहे हैं, किसके लिए काम कर रहे हैं, यह पूरे देश को जानना चाहिए। आपने रेलवे की उन्नति की चर्चा की है, वन्दे भारत की चर्चा की है। हमारे एक मित्र ट्रेन में सफर करने के बारे में कह रहे थे। मैंने शायद ट्रेन में भी सफर किया है, रोड से भी सफर किया है और इतना सफर किया है कि जब उसके आंकड़े

सामने आएं, तो उस पर एक गाथा लिखी जा सकती है। ट्रेन में सफर करने वालों की हालत आज क्या है? इंसान को भूसे की तरह भरकर एक जगह से दूसरी जगह जाना पड़ता है। लखनऊ में उतरने पर वहां मुझे कुली मिले। उनके लिए बहुत पहले एक वादा किया गया था। महोदय, आप एक उदार हृदय के व्यक्ति हैं, तो मैं चाहता हूं कि आपके माध्यम से सरकार तक यह बात जानी जाए। इस सरकार ने कुलियों को वादा किया था कि आपके बच्चों को नौकरी दी जाएगी, कुलियों को वादा किया था कि वर्दी दी जाएगी और तमाम प्रकार की सुविधाएं दी जाएंगी। उनका ज्ञापन मेरे पास पड़ा हुआ है। आज भी उनकी मांगों के बारे में कोई सुनवाई नहीं है। आपने इस देश के नौजवानों के साथ क्या किया? पेपर लीक पर पेपर लीक, पेपर लीक पर पेपर लीक। नीट का पेपर लीक, उत्तर प्रदेश में दारोगा की भर्ती का पेपर लीक, गुजरात में पेपर लीक, राजस्थान में पेपर लीक और बिहार में पेपर लीक। अब तक दो साल में 70 पेपर्स लीक हुए हैं।...(व्यवधान)... 70 पेपर्स लीक हुए हैं। इस देश के नौजवानों के साथ आपने खिलवाड़ करने का काम किया है। पेपर लीक के कारण दो करोड़ छात्रों और नौजवानों की जिंदगी बरबाद हुई। उसके लिए कौन जिम्मेदार है, उस पर कैसे कार्रवाई होगी? आप कमेटियां बनाते हैं। एनटीए, जो एग्जाम करा रहा है, मैं आपके माध्यम से यह मांग करता हूं उस एनटीए के अधिकारियों की जांच होनी चाहिए और उन लोगों की जांच कराकर जो लोग भी इसमें शामिल हैं, उनको गिरफ्तार करके जेल में डालिए और एनटीए को भंग कीजिए, क्योंकि बार-बार जब एनटीए एग्जाम करा रहा है, तो पेपर लीक हो रहा है। यह बड़ा सवाल है। इसके बारे में आपको सोचना चाहिए।

4.00 P.M.

मान्यवर, सरकार ने कहा है कि राज्यों के विकास से ही देश का विकास होता है, यह बात सुनकर मेरी आंखों में आंसू आ गए। इतनी बढ़िया बात, इतना उदार हृदय आपका, वाह-वाह-वाह ! ...**(व्यवधान)**... राज्यों के विकास से देश का विकास होता है। मान्यवर, पिछले 9 साल में 324 करोड़ रुपए से ज्यादा इन्होंने दिल्ली को नहीं दिया है, क्योंकि यहां पर आम आदमी पार्टी की सरकार है। यहां पर शिक्षा मंत्री को जेल में डालना है, स्वास्थ्य मंत्री को जेल में डालना है, मुख्य मंत्री को जेल में डालना है। यहां विकास के लिए हमारा सहयोग नहीं करना है। तीर्थ यात्रा योजना रोक लगाओ, होम डिलीवरी योजना रोक लगाओ, मोहल्ला क्लीनिक योजना रोक लगाओ, बिजली फ्री योजना रोक लगाओ, पानी फ्री योजना रोक लगाओ, क्या आपका काम सिर्फ रोक लगाने के लिए है ? आप क्या राज्यों का विकास कर रहे हैं ?

मान्यवर, 8 हजार करोड़ रुपए रूरल डेवलपमेंट फंड का और बाकी शिक्षा, स्वास्थ्य के फंड का - केन्द्र सरकार के हिस्से का - पंजाब का इन्होंने रोक कर रखा है। यह राज्यों का विकास आप कर रहे हैं ? यह राज्यों के साथ आपका बर्ताव है ? यह आपका संघीय ढांचे में यकीन है ? मान्यवर, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है, जिसके बारे में कई वक्ताओं ने पहले भी कहा है, आप किस भावना से काम कर रहे हैं ? इस देश में दलितों के लिए, पिछड़ों के लिए, आदिवासियों के लिए, अल्पसंख्यकों के लिए, उनके अधिकारों की रक्षा के लिए, भारत के संविधान में उनके लिए बहुत बड़ी ताकत दी गई है। ...**(समय की घंटी)** ... लेकिन जब वे जातीय जनगणना की मांग करते हैं, तो आप उनकी मांग को सुनते नहीं हैं। जब वे विश्वविद्यालयों में आरक्षण की बात करते हैं, तो

उसमें एक-एक, दो-दो पोस्ट निकालकर आप वहां पर आरक्षण की व्यवस्था को खत्म करते हैं। जब वे अपने साथ होने वाले भेदभाव की चर्चा करते हैं, तो आप उस पर भी रोक लगाते हैं।

मान्यवर, अमृत काल के अंदर यह सवाल तो सरकार से पूछना पड़ेगा कि जब प्रभू श्रीराम के मंदिर का शिलान्यास हुआ तो तत्कालीन राष्ट्रपति वहां पर क्यों नहीं थे? जब उस प्रभू श्रीराम के मंदिर का उद्घाटन हुआ, तो मौजूदा राष्ट्रपति वहां पर क्यों नहीं थीं ? यह सवाल तो आपसे पूछने के लिए बनता है। मान्यवर, यह सवाल तो इनसे पूछने के लिए बनता है कि अखिलेश यादव जी उत्तर प्रदेश के पांच साल मुख्य मंत्री रहे, जब घर खाली हुआ, तो उसे गंगा जल से धोया जाता है। ...**(समय की घंटी)** ... मुझे शर्म आती है कि आजादी के 75 साल के बाद, मान्यवर, कन्नौज के एक मंदिर में दर्शन करने के लिए अपनी पत्नी के साथ चले गए, उस मंदिर को गंगा जल से बीजेपी के लोगों ने धोने का काम किया। यह आपका रवैया है दलितों के प्रति, पिछड़ों के प्रति। मान्यवर, मैं अपने साथियों का समय कम कर लूंगा।

श्री सभापति: ठीक है। कंटीन्यु रखिए।

श्री संजय सिंह: मान्यवर, यह रवैया ठीक नहीं है। इतना भेदभाव, इतनी दुर्भावना ठीक नहीं है। आप इस देश के दलितों को, पिछड़ों को, आदिवासियों को, अल्पसंख्यकों को अपना मानिए। इस चुनाव में एक संदेश आपको यह भी दिया है कि हम कोई पाकिस्तान नहीं हैं, हम कोई अफगानिस्तान भी नहीं हैं, हम हिंदुस्तान हैं और हम मिलकर रहना चाहते हैं, पूरी धर्मनिरपेक्षता को मजबूत करके रहना चाहते हैं। संविधान को अपने आगे रखकर मजबूती से उसके साथ चलना चाहते हैं। मान्यवर, यह देश हिंदुओं का भी है, मुसलमानों का भी है, सिखों का भी है, ईसाइयों का भी है, बौद्धों का भी है, जैनियों का भी है, यह देश सबका है। आप इस भावना से आगे लेकर चलिए और पूरा देश आपके साथ खड़ा होगा। इतनी नफरत, इतनी दुर्भावना आपके मन में क्यों है ? क्यों आप लोगों को अपने से दूर करने की कोशिश करते रहते हैं। इस पार्टी को भारतीय जनता पार्टी ही रहने दीजिए, इस पार्टी को आप भारतीय झगड़ा पार्टी मत बनाइए। यह बात मैं इन लोगों से कहना चाहता हूं। लड़ाई-झगड़े से इस देश को कुछ मिलने वाला नहीं है, लड़ाई-झगड़े से देश की उन्नति होने वाली नहीं है। आपको 240 सीटें मिली हैं, आप गठबंधन की सरकार चला रहे हैं, आप चलाइए, लेकिन इसके साथ-साथ विपक्ष की भी अपनी भूमिका है, उस भूमिका को भी ध्यान में रखिए, विपक्ष को भी साथ में लेकर चलिए। अगर आप टारगेट करके एक-एक पार्टी को खत्म करने की कोशिश करेंगे, तो जो दूसरों को खत्म करने की कोशिश करता है, उनको ईश्वर अपने आप सही रास्ते पर पहुंचाने का काम करते हैं। मान्यवर, रावण का अहंकार नहीं चला, तो किसी और का अहंकार क्या चलेगा ? मान्यवर, हिंदू धर्म कितना विराट धर्म है, कितना विशाल धर्म है!

मान्यवर, हिंदू धर्म तो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की बात करता है। हिंदू धर्म कहता है कि पूरा विश्व हमारा परिवार है, हिंदू धर्म कहता है कि जब हम कोई भी पूजा खत्म करते हैं, तो कहते हैं - धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो, लेकिन अफसोस है कि भारतीय जनता पार्टी की मानसिकता है - प्राणियों में दुर्भावना हो, प्राणियों में बंटवारा हो, प्राणियों को आपस में बांटा जाए। महोदय, इनके लिए एक बहुत अच्छी लाइन है, मैं

उसको कहना चाहता हूँ। मैं आप लोगों के लिए बहुत ही अच्छी लाइन लिखकर लाया था कि आप लोग किस तरह से मुद्दों से ध्यान हटाना चाहते हैं। वह लाइन है,

*'सभी का ध्यान बांटा जा रहा है
यह हिंदुस्तान बांटा जा रहा है।
हमें ये मंदिर और मस्जिद दिखाकर
हमारा ध्यान बांटा जा रहा है।'*

आप ध्यान बांटने की कोशिश मत कीजिए, मुद्दों पर बात कीजिए। बेरोज़गारी बड़ा मुद्दा है, महंगाई बड़ा मुद्दा है, अशिक्षा बड़ा मुद्दा है, अग्निवीर बड़ा मुद्दा है, भ्रष्टाचार बड़ा मुद्दा है। हमारे किसी साथी ने कहा - मैं आपका स्वागत करता हूँ, आपने कितनी अच्छी बात कही है कि भ्रष्टाचार बहुत बड़ा मुद्दा है, लेकिन यह कैसा भ्रष्टाचार है? भारत के प्रधान मंत्री कहते हैं - यह मोदी की गारंटी है, एक-एक भ्रष्टाचारी को जेल में भेजूंगा - इस बात की गारंटी है। प्रधान मंत्री जी की इस बात को सुनकर मुझे खुशी हुई, प्रसन्नता हुई, लेकिन जब मैं देखता हूँ तो पाता हूँ कि महाराष्ट्र में 70 हजार करोड़ रुपये का घोटाला करने वाला बीजेपी के साथ है, *।

श्री सभापति: संजय सिंह जी, आप नाम मत लीजिए।

श्री संजय सिंह: ठीक है, मैं नाम नहीं लेता हूँ। ..(व्यवधान).. ठीक है सर, मैं नाम नहीं ले रहा हूँ।

श्री सभापति: देखिए, deleted. दूसरी बात ..(व्यवधान)..

श्री संजय सिंह: सर, मैं बस खत्म कर रहा हूँ। ..(व्यवधान)..

श्री सभापति : एक सेकंड।

श्री संजय सिंह: सर, इस सरकार ने..(व्यवधान)..

श्री जयराम रमेश: आपके सामने बैठे हुए हैं। ..(व्यवधान)..

MR. CHAIRMAN: Mr. Jairam Ramesh, first, you are speaking while sitting on your seat. I am sure you are a very senior Member. You know it. Secondly, why are you intervening? I expect from a learned man like you a different kind of conduct, which can be exemplified by others. Please, help me. Sanjayji, these are deleted.

श्री संजय सिंह: ठीक है। सर, आपका जो फैसला है, वह हमें मान्य है।

* Expunged as ordered by the Chair.

मान्यवर, प्रधान मंत्री जी ने कहा कि किसी भी भ्रष्टाचारी को नहीं छोड़ूंगा, इस बात की गारंटी है, लेकिन जब हम लोगों ने पूरे देश में निगाह उठाई, तब मुझे उनके नारे का मतलब समझ में आया। वह नारा यह है कि एक भी भ्रष्टाचारी को नहीं छोड़ूंगा - * यह गारंटी है आपकी। अच्छी बात है कीजिए, तरक्की करेंगे आप लोग।

महोदय, एक वॉशिंग मशीन भी चल रही है, लेकिन मैं एक बात जरूर कहना चाहूंगा। मान्यवर, आपने मुझे रोक दिया, मैं मानता हूँ, आपके आदेश का पालन करूंगा, लेकिन सब जगह 'चंदा दो, धंधा लो स्कीम' मत चलाइए। इलेक्टोरल बाँड में आपका पर्दाफाश हो चुका है। 3 लाख, 2 हजार करोड़ रुपये के ठेके अलग-अलग कंपनियों को दिए गए, जिनसे इलेक्टोरल बाँड के नाम पर पैसा लिया गया। मान्यवर, इसकी जाँच होनी चाहिए।

मान्यवर, मैं अयोध्या का जिक्र करने लगा, तो आप सभी लोग नाराज हो गए, परंतु मेरे मन में भी नाराजगी है, गुस्सा है, मैंने आपको चेताया था, एप्लिकेशन भी दी थी, कोतवाली तहरीर दी थी। मान्यवर, प्रभु श्रीराम के मंदिर के स्थल पर ऐसे काम नहीं होने चाहिए, सड़कों पर गड्ढे बनेंगे, तो सवाल उठेंगे और वे सवाल आपसे पूछे जाएंगे। मान्यवर, श्रीराम प्रभु हैं, पर आपने उनके लिए गाना बना दिया, जो 'राम को लाए हैं, हम उनको लाएंगे।' आप बताइए! क्या यहाँ पर बैठा हुआ कोई व्यक्ति इस हैसियत में है कि वह श्रीराम को ला सकता है? नहीं। भगवान श्रीराम हम सबको लेकर आए हैं। भगवान इंसान को लेकर आता है, कोई इंसान भगवान को नहीं ला सकता है। जमुना प्रसाद उपाध्याय जी हमारे एक बहुत पुराने कवि हैं, उन्होंने एक लाइन लिखी थी -

“तुम्हारी पोल पट्टी खोलने लग जाएं तो क्या हो,
अगर मंदिर की मूरत बोलने लग जाए तो क्या हो,
बताओ ब्रह्म वेला में जहाँ तुम पाप धोते हो,
वही सरयू का पानी खोलने लग जाए तो क्या हो।”

आज सरयू का पानी उबाल मार रहा है। अयोध्या में जो हालात हैं, वे आपको देखने चाहिए। अयोध्या के परिणाम से आप नाराज हुए और नाराज होना बनता भी है, लेकिन क्या आपने उसके कारण सोचे? राम वन गमन पथ - आप अयोध्या हारे, प्रतापगढ़ हारे, सुल्तानपुर हारे, कौशाम्बी हारे, सीतापुर हारे, रामपुर हारे, श्रावस्ती हारे, प्रयागराज हारे, चित्रकूट हारे। जहाँ-जहाँ से प्रभु श्रीराम गुजरे थे, वे सारी सीटें आप लोग हार गए। नासिक हारे, रामटेक हारे, तो इसकी समीक्षा कीजिए। आप वर्धा हारे। इसकी समीक्षा कीजिए कि आपके साथ ऐसा क्यों हो रहा है। आप भगवान के नाम पर श्रद्धा रखिए और उसका विस्तार कीजिए, हमें कोई आपत्ति नहीं है। ...**(व्यवधान)**... इनका प्यार खत्म ही नहीं हो रहा है। ...**(व्यवधान)**...

मान्यवर, मैं सिर्फ़ इनसे इतना कहना चाहता हूँ कि आप जो दिल्ली के साथ कर रहे हैं, जो हमारे मुख्य मंत्री के साथ कर रहे हैं, अंतिम बात उनके बारे में कहकर, अपनी बात को मैं खत्म करूँगा। इससे आपका कोई राजनीतिक फायदा नहीं होगा। मैं अपनी बात को इस सदन में बोल रहा हूँ, इसे याद रखिएगा। इससे आपको कोई राजनीतिक लाभ नहीं होने वाला है। आप 1925 की

* Expunged as ordered by the Chair.

संस्था हैं। सौ साल हो गए हैं। सौ साल पुरानी संस्था है, आप लोग वहाँ से निकले हैं। सौ साल हो गए हैं, लेकिन दिमाग अभी भी बच्चों का है, अभी भी बच्चों की तरह खेल रहे हैं। मैं राजनीति में आया डा. लोहिया को पढ़कर, लोकनायक जयप्रकाश नारायण को पढ़कर, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को पढ़कर, शहीद-ए-आज़म भगत सिंह को पढ़कर। आप सोचते हैं कि आप अरविंद केजरीवाल को जेल में डालकर, सिसोदिया को जेल में डालकर, सत्येंद्र जैन को जेल में डालकर, संजय सिंह को जेल में डालकर हमारी पार्टी को खत्म कर देंगे। ...**(व्यवधान)**... यह होने वाला नहीं है। ...**(व्यवधान)**... याद रखना, यह कतई होने वाला नहीं है। ...**(व्यवधान)**... आप इस शरीर के सौ टुकड़े भी कर देंगे, तो भी आपके सामने झुकने वाले नहीं हैं। आपसे लड़ेंगे और जीतेंगे। आप जितना उत्पीड़न करना चाहते हैं, कीजिए। ...**(व्यवधान)**... आप उत्पीड़न कीजिए। आपने छः महीने जेल में रखा। आपने सोचा कि आपके सामने नतमस्तक हो जाएंगे। इस माँ भारती ने बहुत सारे बेटे ऐसे पैदा किए हैं, जो आपके सामने कभी सिर नहीं झुकाएंगे, आपसे लड़ने के लिए तैयार रहेंगे। याद रखिएगा। मान्यवर, आपने मुझे राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर अपनी बात कहने का मौका दिया। मैं 11 महीने के बाद बोल रहा था। मैंने आपके सामने बहुत सारे मुद्दे रखे, जिससे सरकार को चेताने का प्रयास किया। कितना चेतेंगे, कितना जागेंगे, यह तो मुझे नहीं मालूम। मैं एक ही बात कहकर, अपनी बात को खत्म करूँगा। अभी सवेरा है, अगर आप सही रास्ते पर आ जाएंगे, तो अच्छा है। अहंकार के रास्ते पर विनाश ही मिलेगा, आपको विकास नहीं मिलेगा, आप देश को आगे लेकर नहीं जा पाएंगे। आप अहंकार छोड़ दीजिए, यह आप लोगों को सबसे बड़ी बीमारी लग गई है। सबका मजाक उड़ाना, सबके साथ गालीबाजी करना, यह सब छोड़ दीजिए। इससे आपको कोई फायदा होने वाला नहीं है। इससे कोई फायदा नहीं होने वाला है।

“हम आह भी करते हैं तो हो जाते हैं बदनाम
वो कत्ल भी करते हैं, तो चर्चा नहीं होती”

बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री प्रफुल्ल पटेल (महाराष्ट्र): धन्यवाद, चेयरमैन साहब। राष्ट्रपति महोदया के अभिभाषण के धन्यवाद प्रस्ताव पर हम इस सदन में चर्चा कर रहे हैं। मैं तहेदिल से राष्ट्रपति महोदया को अपनी ओर से और अपनी पार्टी की ओर से धन्यवाद देना चाहता हूँ कि उन्होंने एक बहुत अच्छी और सुंदर सरकार की 10 साल के कार्यों की सूची हमारे सामने प्रस्तुत की और सरकार की आगे आने वाले 5 वर्षों में क्या मंशा है, उसके बारे में भी हमें एक संदेश देने का काम किया। यह एक अच्छी परंपरा है और यह हमारी संसदीय कार्यप्रणाली में होनी चाहिए। दुर्भाग्य से इन परंपराओं को, आप भी बड़े पीड़ित होकर कई बार महसूस करते हैं कि जिस तरह से इनको निभाना चाहिए, उस तरह से हम निभा नहीं पाते हैं। हम विभिन्न मुद्दों से भटकते हैं, कई प्रकार की टोका-टोकी होती है और अच्छे मुद्दों को नजरअंदाज किया जाता है। इस परंपरा को किस तरह से अच्छा कर सकते हैं, उसके लिए भी हम आगे आशा और अपेक्षा रखते हैं।

यहां हमारे कई विपक्ष के साथियों, नेता प्रतिपक्ष, बाकी लोगों के और इस साइड से भी कई हमारे साथियों के जो वक्तव्य हुए हैं, उनको सुनने का मौका मिला। उनमें से कुछ बातों को मैं आगे स्पष्ट भी करना चाहूँगा। सुबह हमारी भारतीय क्रिकेट टीम की सराहना के लिए जो धन्यवाद

प्रस्ताव हुआ, उस पर मैं भी अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उनकी सराहना करना चाहूंगा कि उन्होंने हमारे देश का नाम ऊंचाइयों तक पहुंचाया और रोशन किया है। पेरिस ओलम्पिक्स भी आगे आने वाला है। हमने पिछले ओलम्पिक्स में बहुत शानदार प्रदर्शन किया। आगे आने वाले इस ओलम्पिक्स के लिए मैं हमारे सभी खिलाड़ियों को अपनी ओर से शुभकामनाएं देना चाहता हूं।

सर, यहां पर अलग-अलग मुद्दों पर चर्चा हुई। हम संविधान सदन से शुरू करते हैं। हम लोगों ने, महान पुरुषों ने, हमारे पूर्वजों ने, जो सामने हमारी पुरानी पार्लियामेंट बिल्डिंग है, जिसको हमने संविधान भवन का नाम दिया, जो संविधान सदन है, जो सेंट्रल हॉल है, वहां पर कई महानुभावों ने संविधान के संबंध में अपनी बातों को रखने की कोशिश की है। सभी को मालूम है कि हमारे भारत के संविधान को विश्व में जो भी संविधान हैं, उनमें सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। आज संख्या में 140 करोड़ लोग हैं और अगर हम यहां पर डेमोक्रेसी को, लोकतंत्र को जिंदा रख पाए हैं, तो केवल और केवल भारतीय संविधान के आधार पर ही हम अपने इस लोकतंत्र को जीवित रख पाए हैं। सरकारें आई हैं और सरकारें गई हैं, चुनाव हुए हैं और उसके बाद भी हम लोगों को जो यह लोक सभा का चुनाव हुआ - भारत के संविधान पर प्रहार हो रहा है, भारत का संविधान खतरे में है - इस तरह की बातें बार-बार सुनने को मिलीं। यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है। सभी लोग इस संविधान के तहत ही आज इस सदन में बैठे हैं या उस सदन में निर्वाचित हुए हैं, लेकिन हमने फिर भी अपने संविधान के बारे में काफी कुछ इधर-उधर की बातें की हैं। हम लोग जब संविधान की बात करते हैं - हमारे founding fathers ने Constituent Assembly में जो कुछ चर्चाएं कीं, deliberations किए, वे हम सभी लोगों को कई माध्यम से इतने वर्षों में सुनने और जानने को मिले हैं। हम democracy की बात करते हैं और विदेशों की बात भी करते हैं, America is supposed to be the oldest democracy in the world. पुरी साहब, आपको तो अपने अंतरराष्ट्रीय कई कार्यकालों में देखने को मिला होगा, कई देशों के संविधान के बारे में भी सुनने और पढ़ने को मिला होगा, अमेरिका में भी काली चमड़ी वाले जो हमारे वहां के रहवासी हैं, नागरिक हैं, महिलाएं हैं, उनको वोट का अधिकार, you are a constitutional expert, वह नहीं मिला था। हमारे देश में 1950 में डा. बाबा साहेब अम्बेडकर के द्वारा लिखित और उनके सहयोगियों के द्वारा प्रेषित इस संविधान में वोट का अधिकार मिला है, वह किसी धर्म, जाति या मजहब के भेदभाव के बिना मिला है। हमें यह जो अधिकार मिला, वह अमेरिका में 1950 में भी प्राप्त नहीं हुआ था। मार्टिन लूथर किंग ने वहाँ पर यह मुहिम चलाई, महात्मा गाँधी से प्रेरणा ली और वहाँ के नागरिकों को, महिलाओं को, वहाँ के हमारे काली चमड़ी वाले भाई-बहनों को वोट का अधिकार 60 के दशक में मिला। संजय भइया, यह भी हम लोगों के लिए यहाँ पर बहुत सोचने-समझने की बात है। इसलिए भारतीय संविधान को जो हम ...(व्यवधान)... क्या बात कर रहे हैं संजय भइया। आप भी संजय, वे भी संजय, आप कोई चिंता मत करिए। ...(व्यवधान)... बिल्कुल, बात सही है। जो बात मैं रख रहा हूँ, अगर उस पर आपको कोई आपत्ति हो, तो कोई बात नहीं। Anyway, I know what point I am making.

श्री सभापति: प्रफुल्ल जी, एक सेकंड। मैं अक्सर कहता हूँ कि मुझे लोक सभा का सदस्य बनने का मौका मिला। मैं जितने महीने लोक सभा में रहा, एक महीने में दो साल के बराबर आप पार्लियामेंट में रहे हैं। आपको इतना अनुभव है।

SHRI PRAFUL PATEL: Thank you, Sir. मैं अपने आपको कोई ज्यादा ज्ञानी नहीं समझता, मैं practical आदमी हूँ और practical बात कर रहा हूँ। मैं इतना ही कहूँगा कि हमारे देश में आज 75 साल के बाद भी जो हम देख रहे हैं, संविधान के तहत ही यह सब कुछ हो रहा है। इसीलिए इतना अफसोस होता था कि पूरे चुनाव में कहा जा रहा था कि संविधान खतरे में है, अगर 400 पार होगा, तो संविधान बदला जाएगा, किसी का आरक्षण चला जाएगा, किसी के अधिकार छीने जाएँगे। किस तरह की छोटी बातों को लेकर हम लोग इस राष्ट्र का चुनाव लड़ रहे थे! ...(व्यवधान)... नहीं, छोटी बात थी, क्योंकि सच्चाई नहीं थी, इसलिए छोटी बात थी। ...(व्यवधान)... प्रियंका जी, अभी चेयरमैन साहब ने बोल दिया, अब आप क्यों मेरे सामने यह बात कह रही हैं। सर, मेरा यह कहना है कि हमारा जो संविधान है, उसको कोई हाथ नहीं लगा सकता, यह सुप्रीम कोर्ट के कई फैसलों में कहा गया है। हम सब लोगों ने यह अनुभव किया है कि यह संविधान कभी बदला नहीं जा सकता। हम संविधान की बात कर रहे हैं, अगर कोई सोचे, नड्डा जी, किसी ने यह बात नहीं की, मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि दुर्भाग्यपूर्ण है कि जिस संसद में, लोक सभा में, जहाँ पर हम कानून बनाते हैं और फिर इस सदन में उसको पारित करते हैं, उसको सेकंड करते हैं, मुझे यह बताइए कि वहाँ पर सभी पार्टियों के 100 से ज्यादा एससी-एसटी एमपीज़ उस सदन में निर्वाचित होकर आते हैं, अगर हमारे संविधान में कभी कोई परिवर्तन करके हम एससी-एसटी या किसी वर्ग का आरक्षण या उनका अधिकार छीनने की बात करेंगे, तो क्या वे 100 एमपीज़ उसका समर्थन करने वाले हैं? वे किसी भी पार्टी के होंगे, तो क्या वे उसमें एक नहीं होंगे? इस बात को हम लोग उतना effectively नहीं कह पाए, जितना हमें कहना चाहिए था, लेकिन सच्चाई यह है कि संविधान को कोई हाथ नहीं लगा सकता है। ...(व्यवधान)... भाई साहब, अब मैंने क्या और कब बोला और आज बोला, मैं बताऊँगा। ...(व्यवधान)...

MR. CHAIRMAN: One minute, please. Mr. Shaktisinh, two mistakes; one, indecorous conduct and the second, not from your own seat! You have been the Leader of the Opposition. Please sit down.

श्री शक्तिसिंह गोहिल: सर, यह हमारे आपस का प्यार है।

श्री सभापति : आप मुझसे प्यार कीजिए। मुझसे प्यार-मोहब्बत कीजिए।

श्री शक्तिसिंह गोहिल: सर, बहुत महँगा पड़ेगा।

श्री प्रफुल्ल पटेल: सर, संविधान के ऊपर प्रहार, ये सब बातें पहले भी हो चुकी हैं, दोनों बाजू से हो चुकी हैं, इमरजेंसी की बात हुई, सब कुछ हुआ, इसलिए मैं उनको दोबारा दोहराना नहीं चाहूँगा,

लेकिन अभी संविधान के तहत चुनी हुई सरकारें होती हैं। पिछले 75 सालों में धारा 356 का कितना उपयोग हुआ है, दुरुपयोग हुआ है, यह हम लोगों को मालूम है। यह किस दौरान हुआ है और पिछले 10 सालों में कितनी बार इसका उपयोग हुआ है, ज़रा इसका भी तो विश्लेषण यहाँ होना चाहिए या नहीं होना चाहिए? पिछले 10 सालों में एक बार भी इस सरकार ने कभी आर्टिकल 356 का इस्तेमाल करके किसी भी चुनी हुई सरकार को हटाने का काम नहीं किया है, इस बात को भी हम लोगों को स्वीकार करना पड़ेगा। आज मेरे नेता पवार साहब अभी कुछ वक्त पहले यहाँ हाउस में थे। वे संजय जी की बगल में ही बैठे थे।

श्री सभापति: एक सेकंड। संजय जी उनकी बगल में बैठे थे।

श्री प्रफुल्ल पटेल : कोई बात नहीं। एक ही बात है। इन्होंने मेरी जगह ले ली है।

श्री संजय राउत (महाराष्ट्र): सर ...(व्यवधान)...

श्री प्रफुल्ल पटेल: संजय जी, जो जगह मैंने खाली की, वह आपने ले ली, तो मुझे कोई चिन्ता नहीं है।

श्री संजय राउत: मैं पहले से उनके साथ रहा हूँ। ...(व्यवधान)...

श्री प्रफुल्ल पटेल: कौन कितना किनके साथ रहा है, वह मुझसे बेहतर आपको मालूम नहीं हो सकता।

श्री सभापति: प्रफुल्ल जी, संजय जी कुछ भी कर सकते हैं, परन्तु किसी की खाली जगह पर नहीं बैठेंगे। ...(व्यवधान)... वे यहाँ अपने ही स्थान पर बैठेंगे। ...(व्यवधान)...

श्री प्रफुल्ल पटेल: सर, पवार साहब 1980 में महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री थे। 1980 में केन्द्र में सरकार वापस बदली। जब केन्द्र में सरकार बदली तब उनको एक फोन आया कि आप हमारे दल में या हमारे साथ हो जाइए, तो आपकी सरकार बरकरार रहेगी और अगर आप नहीं आएँगे, तो सरकार में आप कल नहीं दिखेंगे। तो आर्टिकल 356 का इस्तेमाल 1980 में हमारे नेता पवार साहब के साथ ही हुआ था, यह मैं आप सब लोगों को सिर्फ यहाँ पर स्मरण कराना चाहता हूँ। ...(व्यवधान)... ठीक है, जयराम जी, अभी ये सब बातें हो रही हैं ...(व्यवधान)...

श्री संजय राउत: सर ...(व्यवधान)...

श्री प्रफुल्ल पटेल: कोई बात नहीं। ...(व्यवधान)... कोई बात नहीं। ...(व्यवधान)... वह सब हम लोग मानते हैं। अभी आप जो बोलें, हम मानेंगे। ...(व्यवधान)... सर, चुनी हुई सरकारों...

श्री सभापति: प्रफुल्ल जी, जयराम जी यदि कोई बात कहें, तो ये बहुत ज्ञाता हैं। ये statistics के मामले में कभी चूक नहीं करते हैं, unless he wants to do it. पहली बार देश में राष्ट्रपति शासन कब लगा, इसकी विवेचना कभी मैं जयराम जी से अपने चेम्बर में करूँगा। वह जानकारी सबको होनी चाहिए।

श्री जयराम रमेश : मैं आपको पूरा इतिहास बताऊँगा।

SHRI PRAFUL PATEL: Jairam, you and me have love and hate relationship. So, it is okay.

सर, कुछ कहावतें हैं, मुहावरे हैं, मगर संसद में बोलने जैसे नहीं होते हैं। मुझे याद है कि हम भी उस सरकार के साथ या उस सरकार के साथ वाले उस दल के सदस्य थे। वहाँ पर किस तरह के, किस पार्टी के एमपीज़ को - सरकार बचाने के लिए 5 एमपीज़ को वहाँ पर जो भी कुछ, रिश्त बोलिए या उसे जो भी कुछ बोलिए, वह दिया गया और उसके बाद उनको बाद में सजा भी हुई। नरसिम्हा राव जी की सरकार थी, यह भी आप सब लोगों को मालूम है। दूसरा आपको मालूम है कि जिस सरकार में ...(व्यवधान)...

SHRIMATI PRIYANKA CHATURVEDI (Maharashtra): Sir, he should authenticate that. ...(Interruptions)...

SHRI PRAFUL PATEL: What is there to authenticate? ...(Interruptions)... What is there to authenticate? ...(Interruptions)...

SHRIMATI PRIYANKA CHATURVEDI: Sir, he has to authenticate. ...(Interruptions)...

श्री शक्तिसिंह गोहिल: सर ...(व्यवधान)...

श्री जयराम रमेश: सर ...(व्यवधान)...

SHRI PRAFUL PATEL: What is there to authenticate? ...(Interruptions)... JMM के 5 एमपीज़ को नरसिम्हा राव जी की सरकार बचाने के लिए ...(व्यवधान)... इसको authenticate क्या करना है, यह तो पार्लियामेंट में हुआ है। ...(व्यवधान)... इसमें authenticate क्या करना है? ...(व्यवधान)... उनको सजा हुई है। ...(व्यवधान)... क्या authenticate करना है? ...(व्यवधान)... क्या authenticate करना है? ...(व्यवधान)... देखिए, इतना आगबबूला मत होइए।...(व्यवधान)...

MR. CHAIRMAN: Jairamji, let it be all-Maharashtra-affair. Why are you rising? All the four Members -- Shrimati Rajani Ashokrao Patil, Shri Sanjay Raut, Shrimati

Priyanka Chaturvedi, Shri Praful Patel -- are from Maharashtra. Let them deal with it.
...(Interruptions)...

श्री जयराम रमेश: सर, 1994 में कौन किस पार्टी में थे, उसकी पूरी जानकारी हमारे पास है।...(व्यवधान)...

श्री प्रफुल्ल पटेल: कोई बात नहीं।...(व्यवधान).... हम भी उस समय पार्टी में थे। हम यह नहीं बोल रहे हैं कि हम उस समय पार्टी में नहीं थे।...(व्यवधान).... हम उस समय पार्टी में थे।...(व्यवधान).... इसमें ऑथेंटिकेट क्या करना है? ...(व्यवधान).... यह संसद में हुई घटना है।...(व्यवधान).... जयराम, प्लीज।...(व्यवधान).... सर, यूएस-इंडिया न्यूक्लियर डील के वक्त हम भी सरकार में थे।...(व्यवधान)....

श्री सभापति: प्रफुल्ल जी, मैं एक बात बताना चाहता हूँ। हमारे राजस्थान में जयराम कब कहते हैं? हम इस तरह से इशारा करते हैं तब हम जयराम जी कहते हैं, इसलिए आप ऐसा जयराम मत कीजिए।

श्री प्रफुल्ल पटेल: सर, यूएस-इंडिया न्यूक्लियर डील के वक्त लोक सभा में हम भी सरकार में थे। 2008 में सरकार में मैं भी एक सदस्य था।...(व्यवधान)...

श्री जयराम रमेश: पैन इंडिया।...(व्यवधान)...

श्री प्रफुल्ल पटेल: कोई बात नहीं। चिदम्बरम साहब उसके चेयरमैन थे।...(व्यवधान).... Don't talk about all this. इससे आप दुखी होंगे।...(व्यवधान).... कोई बात नहीं।...(व्यवधान).... एयर इंडिया।...(व्यवधान).... Don't worry. ...(Interruptions).... मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता है, आप टोकते रहिए और मैं बोलता जाऊँगा।...(Interruptions)....

MR. CHAIRMAN: Please speak. Nothing will go on record except what Mr. Praful Patel says.

SHRI PRAFUL PATEL: Sir, they want me to authenticate what was shown live on the television which is recorded in Sansad TV. Do they want me to authenticate that also? ...(Interruptions).... Did that happen or not in the Lok Sabha? ...(Interruptions).... So, who is responsible for constitutional morality? Who is responsible for running the Government according to the Constitution? अपनी सरकारें बचाने के लिए आप कुछ भी compromise करने के लिए तैयार थे, रिश्वत देने के लिए तैयार थे। किसी भी स्तर पर उतरने के लिए तैयार थे।...(व्यवधान).... आज यहाँ पर बड़े-बड़ लेक्चर दिए जा रहे हैं।...(व्यवधान).... कोई बात नहीं, कोई बात नहीं।...(व्यवधान)....

MR. CHAIRMAN: Please continue. Nothing else will go on record.
...(Interruptions)...

श्री संजय राउत: †

श्रीमती रजनी अशोकराव पाटिल: †

श्रीमती प्रियंका चतुर्वेदी: †

MR. CHAIRMAN: Nothing else will go on record. ...(Interruptions)... Nothing else will go on record, Priyanka Chaturvedi. ...(Interruptions)... Please conclude. ...(Interruptions)...

श्री प्रफुल्ल पटेल : सर, क्या मैं कन्क्लूड करूँ? ...(व्यवधान)...

MR. CHAIRMAN: Please conclude. ...(Interruptions)...

SHRI PRAFUL PATEL: I am not concluding, Sir. I have a lot of time. Naddaji's party has a lot of time. I will take more time. ...(Interruptions)...

MR. CHAIRMAN: Alright; alright. ...(Interruptions)...

SHRI PRAFUL PATEL: Don't worry. I have that much privilege to take some more time. ...(Interruptions)... सर, संजय सिंह जी अभी यहाँ पर बड़े ज्ञान की बातें कर रहे थे। यह अच्छी बात है, मगर इसके साथ ही उनकी जीभ कहीं पर फिसल गई और उन्होंने 70 हजार करोड़ और हमारे पार्टी के एक नेता का नाम लिया, फिर उसको वापस लिया। चूँकि वे यह बात बोल चुके, इसलिए मुझे कुछ तो रेस्पॉन्ड करने की जरूरत पड़ेगी ना। संजय जी, आप, आपकी पार्टी और आपके नेता तथा आपके जो साथी यहाँ पर बैठे हैं, वे यहाँ तक पहुँचने में 'इंडिया अगेंस्ट करप्शन' आंदोलन में हमारे महाराष्ट्र के एक पुराने बुजुर्ग नेता को पकड़ कर लाकर, इन सब लोगों को और हम सब लोगों को बदनाम करके यहाँ पर बैठे हैं।...(व्यवधान)...

श्री संजय सिंह: सर...(व्यवधान)...

श्री सभापति: संजय, संजय...(व्यवधान)...

†Not recorded.

श्री प्रफुल्ल पटेल: आपने कैसे बनाया? ...(व्यवधान)... 'इंडिया अगेंस्ट करप्शन' किसके अगेंस्ट था? ...(व्यवधान)...

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record except what Mr. Patel says. ...*(Interruptions)*... Nothing will go on record. ...*(Interruptions)*...

श्री संजय सिंह : †

श्री प्रफुल्ल पटेल: यह इन सब लोगों के अगेंस्ट था।...(व्यवधान)... वह किसके अगेंस्ट गया? ...(व्यवधान)... आप किसकी वजह से यहाँ आए हैं? ...(व्यवधान)...

श्री संजय सिंह : †

श्री सभापति : मि. नागर, कृपया आप बैठिए।...(व्यवधान)...

श्री संजय सिंह : †

श्री प्रफुल्ल पटेल: केवल काँग्रेस पार्टी और उस वक्त की हमारी यूपीए सरकार को बदनाम करके आप यहाँ पर बैठे हैं।...(व्यवधान)... कैसे बोल रहे हैं, आप? ...(व्यवधान)...

श्री संजय सिंह : †

श्री प्रफुल्ल पटेल: अभी ये आपको अच्छे लग गए? ...(व्यवधान)...

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record. ...*(Interruptions)*... Except what Mr. Praful Patel says, nothing will go on record.

श्री संजय सिंह : †

MR. CHAIRMAN: Mr. Sanjay, take your seat. ...*(Interruptions)*... Nothing will go on record except what Mr. Praful Patel says. ...*(Interruptions)*...

श्री प्रफुल्ल पटेल: इन्होंने हमारी पार्टी का नाम लिया, इसलिए मुझे रिस्पॉंड करना पड़ेगा। ...(व्यवधान)...

† Not recorded.

MR. CHAIRMAN: What are you doing? Don't you want your speaker to speak? He is taking your time that has been given by the Leader of the House. You are interrupting him for what good purpose! Let everyone express. We heard Mr. Sanjay patiently. Mr. Sanjay levelled many salvos. You only have to read your speech. So, listen to it.

श्री संजय सिंह :†

MR. CHAIRMAN: No; listen to it.

श्री प्रफुल्ल पटेल: आपने हमारी पार्टी का नाम लिया, हमारी पार्टी के नेता का नाम लिया। आप कैसे बोल सकते हो कि नहीं लिया?

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record except what Mr. Patel says.

श्री संजय सिंह :†

श्री प्रफुल्ल पटेल: आपने लिया न अभी?

श्री संजय सिंह :†

श्री प्रफुल्ल पटेल : हाँ, तो आपने किसका नाम लिया?

श्री संजय सिंह :†

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record except what Mr. Patel says.

श्री प्रफुल्ल पटेल: अगर आपको 70,000 करोड़ का सिंचाई घोटाला लगता है, तो जो घोटाले उन्होंने किए, उनके साथ क्यों बैठे हो? ...(व्यवधान)...

श्री संजय सिंह :†

MR. CHAIRMAN: Okay.

श्री प्रफुल्ल पटेल : एक मिनट। अब record भी straight हो जाना चाहिए, सर।

† Not recorded.

श्री संजय सिंह : †

MR. CHAIRMAN: Mr. Sanjay, please sit down.

श्री प्रफुल्ल पटेल: 70,000 करोड़ का घोटाला हुआ है, यह बोलने वाले तब के तत्कालीन मुख्य मंत्री थे, जिन्होंने इस 70,000 करोड़ की शुरुआत की। कोई इधर से शुरुआत नहीं हुई थी। ...**(व्यवधान)**... आपने हमारे एक बुढ़े बाबा जी को यहाँ बुलाकर, उनके कंधे से बंदूक चलाकर हमारी पार्टी को और हमारे नेताओं को बदनाम करने का काम किया।

श्री संजय सिंह : †

श्री प्रफुल्ल पटेल : छोड़ दीजिए, आपको मालूम नहीं है। ...**(व्यवधान)**...

श्री संजय सिंह : †

MR. CHAIRMAN: Nothing is going on record, Mr. Sanjay.

श्री प्रफुल्ल पटेल : अच्छा, आपने क्लीन चिट दे दी न?

श्री संजय सिंह : †

श्री प्रफुल्ल पटेल : आपने India Against Corruption क्यों चालू किया था?

श्री संजय सिंह : †

श्री प्रफुल्ल पटेल : आपने India Against Corruption किसके खिलाफ चालू किया था?

श्री संजय सिंह : †

MR. CHAIRMAN: Mr. Sanjay, nothing is going on record.

श्री संजय सिंह : †

MR. CHAIRMAN: Take your seat.

† Not recorded.

SHRI PRAFUL PATEL: Sir, he mentioned my party's name indirectly. He took my party leader's name indirectly and one leader's name directly. So, I have every reason to respond and I have every right to respond. I cannot allow somebody to make an allegation like this and standing here, I will not allow that. सर, ये जितना कम बोलें, उतना अच्छा है।...(व्यवधान)...

श्री जयराम रमेश : †

श्री प्रफुल्ल पटेल: कोई भी बोले, आप तो हमारे पार्टनर रहे हैं न!...(व्यवधान)...

श्री जयराम रमेश : †

श्री प्रफुल्ल पटेल: प्रधान मंत्री ने नहीं, पहले आपके मुख्य मंत्री ने शुरू किया। छोड़ो।...(व्यवधान)...

श्री संजय सिंह : †

श्री जयराम रमेश : †

श्री प्रफुल्ल पटेल: हमारे पास आपके बहुत भाषण हैं।...(व्यवधान).... सर, इसलिए संविधान की बातें ये सब कम करें। कोई संविधान खतरे में नहीं है। अब इनके पास और कुछ नहीं है। इनका अस्तित्व खतरे में था, इसलिए इस देश के नागरिकों को, हमारे एससी, एसटी और ओबीसी के लोगों को बरगलाने का, बहकाने का काम इन लोगों ने किया।...(व्यवधान).... उनका केवल उपयोग किया है। क्या बात कर रहे हैं ये लोग! संविधान को कौन हटा रहा है, कौन बदल रहा है?...(व्यवधान).... अभी आपने ही राम मंदिर की बात की, प्रशंसा की। मैं यह विषय निकालने वाला नहीं था। अभी यहां बात निकली और आपने भी प्रशंसा की। मैं एक बात पूछना चाहता हूँ कि यह भारत के संविधान की ताकत है, यहां पर भारत की Judiciary की fairness है कि उन्होंने फैसला किया कि यहाँ पर मंदिर बनेगा और वहां पर मस्जिद बनेगी, सरकार ने या किसी राजनीतिक पार्टी ने नहीं किया। उसके बारे में आप कैसे कह सकते हो? हमारे संजय भइया भूल गए कि हमारे बाला साहेब ठाकरे जी ने ही कहा था कि मुझे गर्व है कि मेरे शिव सैनिकों ने बाबरी मस्जिद को गिराने का काम किया। यह बोलने वाले हमारे महाराष्ट्र के बाल ठाकरे साहेब थे।...(व्यवधान)...

श्री संजय राउत : †

† Not recorded.

श्री प्रफुल्ल पटेल: तो कम से कम आप बोलो न कि आपको गर्व है, अभी क्यों नहीं बोलते हो? पहले तो गर्व से बोलते थे। सर, बहुत टोका-टाकी की वजह से मैं समय की पाबंदी नहीं रख सकूंगा। मैं इतना ज़रूर कहूंगा कि संजय राउत साहब ने कम से कम इतना तो स्वीकार कर लिया कि बाला साहेब ठाकरे ही वह एक नेता थे, जिन्होंने छाती चौड़ी करके कहा कि बाबरी मस्जिद को मेरे शिवसैनिकों ने गिराया था। उन्होंने यह कहा था या नहीं कहा था? ...(व्यवधान)... इसीलिए आज आप परेशान हैं। ...(व्यवधान)...

MR. CHAIRMAN: Mr. Patel, please. ...*(Interruptions)*... Nothing goes on record, Dr. John Brittas. ...*(Interruptions)*... Nothing goes on record. It is a lung power being misutilized. Yes, please continue.

[THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SUJEET KUMAR) *in the Chair.*]

SHRI PRAFUL PATEL: Sir, I am only stating the obvious. ...*(Interruptions)*... And I am saying something which he cannot deny. ...*(Interruptions)*... अगर वे deny कर दें तो आप बोल दीजिए कि मैंने गलत बोला है। यह recorded है, अखबारों में है, टेलीविज़न में है। आप कहेंगे तो authenticate भी कर सकता हूं। मेरा आप सबसे यही निवेदन है कि सरकारें बनती हैं, लोगों के वोट के माध्यम से, लोगों के समर्थन के माध्यम से ...(व्यवधान)... वह तो आपको जवाब देना चाहिए कि आप इनके साथ बैठे थे, अचानक हमारे साथ कैसे आ गए! आप तो लास्ट आदमी बोलने वाले होने चाहिए कि पूरा चुनाव इनके साथ लड़े, फिर बाद में उधर चले गए। अभी आप हमको पूछ रहे हो? ...(व्यवधान)... हे राम! ठीक है, अब राजनीतिक टोका-टाकी बंद करते हैं। आपको जितना मुझे कहना था, वह कह दिया और संजय भड़या ने भी, जिनके साथ उनकी नई संगत है, जिनके साथ उन्हें इतना प्यार हो गया है, उनके खिलाफ उन्होंने और उनके नेता ने क्या-क्या बोला, जिसके माध्यम से संजय भड़या आज यहां पहली row में बैठे हैं। उनको मैं सिर्फ याद कराना चाहता हूं। ...(व्यवधान)... आप चिंता मत कीजिए। अब काम की बात पर आ जाते हैं, जो देश के विकास और उसकी ज़रूरतों की बात है। जितना बोलना था, उतनी टोका-टाकी हो गई।

सर, हमारे देश में पिछले 10 सालों में जो उन्नति हुई है, उसको हम लोग नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते। देश में जो तरक्की होती है, वह हर नागरिक एहसास करता है, हर क्षेत्र का नागरिक एहसास करता है। आज पूरे देश में हर तरह से, तेजी के साथ इन्फ्रास्ट्रक्चर का डेवलपमेंट हो रहा है - रोड, रेलवे, एयरपोर्ट, बाकी के काम, बिजली, renewable energy आदि। आप जो भी कहिए, इन्फ्रास्ट्रक्चर के डेवलपमेंट को undermine करना, कम करना, ठीक नहीं होगा। आज देश में कितने बड़े पैमाने पर घर बन रहे हैं, करोड़ों लोगों को घर मिले, 3 करोड़ से ज्यादा घर बने और अगले 5 साल में 3 करोड़ घर और बनने जा रहे हैं, इस बात की भी सरकार ने गवाही दी है और इसकी शुरुआत भी की है।

सर, स्वास्थ्य के मामले में हमारे देश में कभी मुझे ऐसा नहीं लगता था कि एक दिन आएगा, जब गांव में रहने वाले गरीब आदमी को अगर हार्ट का ऑपरेशन करवाना पड़े या किसी

बड़ी बीमारी का इलाज कराना हो, तो उसके पास पैसा कम से कम घर बेचे बिना या ज़मीन गिरवी रखे बिना आ सकता है। वह इलाज करा जाएगा या नहीं, यह तो बहुत बड़ा प्रश्नचिन्ह था, सरकारी हॉस्पिटल्स में क्या हालत होती थी, यह आप भी जानते हैं, लेकिन आज 'आयुष्मान भारत योजना' के माध्यम से 5 लाख रुपये तक का मुफ्त इलाज कहीं भी, प्राइवेट हॉस्पिटल्स में भी करा सकते हैं - आज स्वास्थ्य के क्षेत्र में इतना विकास हुआ है। आज छोटे-छोटे गांवों में - मुझे कभी नहीं लगता था कि 25-50 हजार लोकसंख्या के गांव और शहर में एन्जियोप्लास्टी और एन्जियोग्राफी हो सकती है, लेकिन आज वहां एन्जियोप्लास्टी और एन्जियोग्राफी होती है और लोगों के घुटने बदले जाते हैं।

SHRIMATI PRIYANKA CHATURVEDI: Sir, I have a point of order.
...(Interruptions)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SUJEET KUMAR): Under what rule?

SHRI PRAFUL PATEL: What is your point of order? अभी प्रियंका जी जरा कम बोलें, तो अच्छा है।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SUJEET KUMAR): Priyankaji, under what rule?
...(Interruptions)...

SHRIMATI PRIYANKA CHATURVEDI: Sir, it is under Rule 240 - 'Irrelevance or repetition'. It says, "The Chairman, after having called the attention of the Council to the conduct of a Member who persists in irrelevance or in tedious repetition either of his own arguments or of the arguments used by other Members in debate, may direct him to discontinue his speech." I would also request you, Sir, that all the extra time that is going out of the time of 'Others' should be deducted from the BJP's account. This is my request to you. But this is irrelevant, repetitive and he is continuing to respond to other Members. You will have to take that call, Sir.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SUJEET KUMAR): The hon. Chair has agreed that he will be allowed to speak and that time will be deducted from the BJP quota.

श्री प्रफुल्ल पटेल: 'अंगूर खट्टे हैं' प्रियंका जी, आपको क्यों इतनी तकलीफ हो रही है। सर, किसानों के मामले में हम लोग बात करते हैं। मैं जब यूपीए की सरकार में था और हमारे नेता शरद पवार जी यशस्वी कृषि मंत्री थे, उनके समय पर उस वक्त की हमारी सरकार ने दस साल में किसानों की 72 हजार करोड़ रुपये की कर्ज माफी की थी और पूरे देश में उसका बहुत पॉजिटिव इम्पैक्ट भी हुआ था। चाहे आप इसे पोलिटिकली कहिए या किसानों की मदद के लिए कहिए।

आज हम लोग भूल जाते हैं कि केवल चार साल में किसान सम्मान निधि के माध्यम से 3,20,000 करोड़ रुपये किसानों को मिल चुके हैं और हर साल 80 हजार करोड़ रुपये और मिलते जाएंगे। आज डायरेक्ट ट्रांसफर हो रहा है। एक बार 72 हजार करोड़ रुपये माफ करने के बारे में इतना गाजा-बाजा हुआ और आज 3,20,000 करोड़ रुपये किसानों को मिल चुके हैं और यह योजना निरंतर जारी है, फिर भी लोग बोलते हैं कि किसानों के लिए क्या हो रहा है। यह बात भूलनी नहीं चाहिए। संजय राउत साहब, हमारे महाराष्ट्र में 6,000 रुपये किसान सम्मान निधि केंद्र से आती है और 6,000 रुपये वहां की महायुति सरकार भी किसान के खाते में जमा कर रही है। इसको ऐसा हल्का-फुल्का कहकर बोलना ठीक नहीं होगा। आज मैं थोड़ा महाराष्ट्र के बारे में भी बोल दूँ, क्योंकि महाराष्ट्र के एक-दो इश्यूज हैं। आज हमारे किसान वहां पर गर्व महसूस कर रहे हैं। परसों बजट हुआ और 14 हजार करोड़ रुपये की योजना लाकर महाराष्ट्र के सारे किसानों की बिजली के बिल माफ कर दिए और आगे से साढ़े सात हॉर्स पावर तक वाले को बिजली फ्री मिलेगी और दिन में भी मिलेगी। यह फैसला हमारी सरकार ने वहां पर किया है। इसलिए बदहज़मी होना स्वाभाविक है। कोई अच्छा काम होगा और अच्छे काम का आप विरोध नहीं कर सकते। मैं यह बात इसलिए कह रहा हूँ कि किसानों के हित में मोदी जी के नेतृत्व में चाहे राज्य की हमारी सरकार हो या केन्द्र की हमारी सरकार हो, वह हमेशा किसानों के लिए सोचती है, काम करती है। यह आपको समझना चाहिए। मैं प्याज के बारे में भी बात करना चाहूंगा। प्याज के संबंध में हम लोगों को हमेशा किसान के मामले में, ग्राहक के मामले में चिंता होती है और यह होना स्वाभाविक भी है। मेरी सरकार से एक रिक्वेस्ट भी है कि प्याज के मामले में एक परमानेंट मैकेनिज्म बनाने की जरूरत है। कई बार ऐसा होता है कि कभी महंगा होता है, तो ग्राहक की आंख में आंसू आता है, कभी दाम गिर जाता है, तो हमारे किसान की आंख में आंसू आता है। कहीं न कहीं इसमें हम लोग मैकेनिज्म बनाएं, ताकि हमारे किसानों को इस मामले में जो पीड़ा होती है, उसको हम permanently दूर कर सकें। इसके बारे में भी हमें सोचना होगा।

आज देश में बहुत सारी महत्वपूर्ण योजनाएं चल रही हैं। देश में 80 करोड़ लोगों को अनाज तभी दिया जा सकता है जब हमारे देश का किसान इतनी बड़ी मात्रा में पैदावार कर रहा है। हमारे देश की जो कृषि उपज है, उसी के कारण आज हम विश्व में लाखों करोड़ का एक्सपोर्ट कर रहे हैं। सर, यह कोई छोटी बात नहीं है। मैं अंत में इतना ही कहूंगा, वैसे तो बहुत सारी चीज़ें हैं। ...**(व्यवधान)**... हां, बोलेंगे। ...**(व्यवधान)**... मुझे पूरा अनुभव है, पूरा अनुभव है। आप चिंता मत करिए। उस तरफ की तकलीफ ज्यादा बढ़ेगी, इसलिए मैं नहीं बोलना चाहता हूँ। ...**(व्यवधान)**...

श्री नीरज शेखर: ज्यादा मत बोलो। ...**(व्यवधान)**... ज्यादा मत बोलो। ...**(व्यवधान)**...

श्री साकेत गोखले (पश्चिमी बंगाल): सर, ये क्या कह रहे हैं ? ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (श्री सुजीत कुमार): नीरज जी, सुरेन्द्र जी, आप बैठ जाइए ...**(व्यवधान)**... प्लीज़, आप लोग बैठ जाइए। ...**(व्यवधान)**... साकेत जी, आप अपनी सीट पर जाइए। ...**(व्यवधान)**... साकेत जी, आप अपनी सीट पर जाइए। ...**(व्यवधान)**... आप बैठ जाइए। नीरज जी, प्लीज़। ...**(व्यवधान)**... नदीमुल हक जी, प्लीज़ आप बैठ जाइए। ...**(व्यवधान)**... आप बोलिए।

श्री प्रफुल्ल पटेल: वाइस चेयरमैन सर। ...**(व्यवधान)**... खरगे जी, लीडर ऑफ अपोजिशन और नड्डा साहब, आप सभी से हमारी रिक्वेस्ट है। यह किसी एक के लिए नहीं है, सबकी रেসपेक्ट रहनी चाहिए। Please, do not talk like this which becomes a laughing stock for the whole country. It is a request. I am making my political points. आपको टोका-टाकी करने की जरूरत नहीं है। ...**(व्यवधान)**... उनको, किसको बोलना है? ऐसा नहीं होता है। सर, आज पूरे विश्व में हमारे देश का एक विशेष स्थान बना है। यह सभी लोगों के खून-पसीने की और मेहनत की कमाई है। सरकार की कमाई तो है ही, लेकिन इस देश के 140 करोड़ लोगों की भी तो कमाई है कि आज विश्व में हमारे भारतीय लोग हैं। चाहे आप किसी भी क्षेत्र में देखिए, वे अव्वल स्थान पर जाकर बैठे हुए हैं। मैं उनको भारत का मूल निवासी तो नहीं कह सकता, लेकिन भारत के मूल निवासियों के सुपुत्र यूनाइटेड किंगडम के प्रधान मंत्री भी बने हैं, आयरलैंड में बन सकते हैं और देशों में बन सकते हैं। विश्व स्तर की बड़ी-बड़ी कंपनियों को भी भारतीय हैड करते हैं। एक बात बहुत बड़ी है, जिसके बारे में प्रधान मंत्री ने कई बार कहा है, वह स्किल डेवलपमेंट की है। आज इतनी स्किल्ड मैनपावर हिंदुस्तान से बाहर जाकर काम कर रही है कि 110 करोड़ बिलियन डॉलर हर साल inward remittance हमारे भारत में आ रहा है, यह किसी भी देश के मुकाबले में ज्यादा है, यह चीन के मुकाबले में भी दोगुना ज्यादा है। ये सभी हमारी उपलब्धियां हैं। मैं ज्यादा वक्त लेकर और ज्यादा नहीं कहना चाहता हूं, लेकिन इतना ही कहना चाहता हूं कि जो 10 साल का कार्यकाल यशस्वी प्रधान मंत्री जी का रहा है, इस सरकार का रहा है, उसके बारे में राष्ट्रपति महोदया ने बहुत सारे पहलुओं पर अपने अभिभाषण में बात रखी है। हमने जो उपलब्धियां आज तक प्राप्त की हैं, अगले पांच साल में और दोगुनी शक्ति के साथ कैसे हम इनको आगे बढ़ा सकें, हम अपने देश के नागरिकों का भविष्य कैसे उज्ज्वल बना सकें, इसकी रूपरेखा इसमें रखी गई है। कृपा करके सभी को, हर वर्ग के लोगों को, हर धर्म, हर मज़हब के लोगों को — हमारे महाराष्ट्र में, हम लोग हमेशा कहते हैं कि शिव, साहू, फुले और अम्बेडकर के आदर्शों पर, विचारों पर चलने वाला महाराष्ट्र है, उसी तरह से हमारा देश भी उन्हीं आदर्शों पर आज चल रहा है। मोदी साहब के नेतृत्व में देश तेज गति से विकास कर रहा है, क्योंकि जब देश का विकास होगा, तो हर धर्म, मज़हब, जाति के व्यक्ति का, आखिरी व्यक्ति का विकास होगा। अब चुनाव का मैदान समाप्त हो गया है। यह पार्लियामेंट है, यहां पर देश की आगे आने वाली पीढ़ी के भविष्य के लिए, उज्ज्वल भारत के भविष्य के लिए हम लोग बात करें। आपने मुझे बोलने के लिए वक्त दिया, इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। साथ ही राष्ट्रपति महोदया को बहुत-बहुत धन्यवाद।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SUJEET KUMAR): The next speaker is Shri Subhasish Khuntia. You have ten minutes. ...**(Interruptions)**... It is your maiden speech. So, you can take fifteen minutes.

SHRI SUBHASISH KHUNTIA (Odisha): *Hon. Vice-Chairperson Sir, at the outset, I offer my salutation to this holy temple of democracy. I pay my salutation to all the hon.

* English translation of the original speech delivered in Odia.

MPs irrespective of their party affiliation. I express my deepest gratitude to you for giving me the opportunity to present my maiden speech in this August House. I will present my brief speech by thanking my dear leader, Shri Naveen Patnaik, for giving me the opportunity to represent from Odisha. My journey as an MP will be enriched and meaningful by the experience and expertise of my fellow MP colleagues. It is my hope and belief that I can be more able, empowered and inspired to serve my Mother and motherland.

Sir, I represent Odisha; the holy seat of Puri, Shreekshetra. Shree Jagannathdham is both my birthplace and work place. Mahaprabhu Srijagannath should not be bound by any narrow considerations. He is the lord of compassion and emotions, always ready to get connected with His devotees. He is the lord of the universe; all paths, opinions, principles, visions, thoughts emanate from Him. Starting from Shankaracharya, Nanak, Kabir, Chaitanya, Salbega all are his devotees. He is the Lord of the fallen and God of the poor. He is truly a symbol of Indianness. He has been heralding the great message of "Vasudhaiva Kutumbakam". To that thought, Gopbandhu Das of Utkalmani said that nationalism is the universal love of the people - let this be the ideal of the people of Utkala. In the words of saint poet Bhimabhoi, who once had said, "witnessing the plethora of plights on earth how one could bear with; let the world get redeemed at my cost". The holy seat of Puri Shreekshetra has always been the fountain head of such inspirational and emotional ideology. There is a need for the extensive development of the shrine.

Sir, you will be happy to know that many visible improvements have been made in the shrine during the period of the last BJD government. 'Srimandir Parikrama' project - a groundbreaking project. In the language of the King of Gajapati, what could not have happened in the last 700 years has become possible. Progress is a continuous process - the Government of India's sincere attention is needed to drive it forward. Sri Jagannath ji is not only the presiding deity of Odisha, but all of India and whole of the universe. I seek all out cooperation for the holistic development of the shrine. Starting from the international airport, the Puri-Konark train connection, construction of an overbridge (ROB) at Siddha Mahaveer Level Crossing on Puri-Konark National Highway should be made at a faster pace. The holy chariot festival will take place on 7th July. Lord Jagannath himself will come out leaving his bejeweled throne to give *darshan* to His devotees. I invite the hon. MPs to witness this extraordinary divine play of the Lord.

Sir, as a new MP, I feel disappointed in the words, judgments and views presented by the Government through the President's address. There was a lack of clarity in speech. There is neither direction nor vision. There is nothing like being

excited. Just a game of numbers and words; the pretence is strong. It seems to me that the Government wants to hide many things. If a patient does not disclose her/his illness, how can she/he be treated? I will hope; Government clarify everything even their failure and weakness then only we can get a way out. I feel that the available acumen of many senior and experienced hon. MPs in the opposition parties should be utilized. It will further enrich the democratic tradition.

Mr. Vice-Chairperson Sir, I am from Odisha. Odisha is a peaceful State. Odisha turned *Chandashoka* into *Dharmashoka*. This is a matter of history and tradition. The whole world knows. The former Chief Minister of Odisha, had proposed that non-violence should be included in the Preamble of Constitution of India. But it is a matter of regret that the Government has not shown any efficiency in this regard. Sir, through you, I would like to draw the attention of the Government to this matter.

Sir, as you know, Odisha is a rich state, where poor people live. Why is there this discrepancy? However, there had been an encouraging change during the BJD Government. Kalahandi, which was called the land of hunger, has now become the rice-bowl of Odisha. Many things have been done but how much can a State Government do in our federal system with meager budget at its disposal? Odisha, the largest source of funds, has been the victim of constant neglect by the Central Government of India. Since independence, Odisha has suffered almost every Central Government's apathy. Odisha is as much under the soil as it is above the soil. Nature has blessed enough. However, Odisha has not been able to move forward at the pace it should. Among its several causes, the biggest one was Central neglect.

Sir, in Odisha, storms, floods, and droughts are ever present. The fury of the super cyclone 1999 has been witnessed by one and all. Odisha has been bearing the brunt of natural calamities. Cyclone Phailin in 2019 and then more than 2 years later, the covid epidemic shook the spine of Odisha. While dealing with it firmly, Odisha is moving ahead with commitment. If the Central Government throws up its hands, nothing can be done. The Central Government is not extending its hands of cooperation. This is really ironical. If the state is prosperous, the country will be prosperous. Odisha has been demanding special state status, special assistance for many years. Unfortunately, the Central Government is not paying any heed to it. I request and reiterate that the Central Government considers the old demands of Odisha.

History says that independence started from Sepoy mutiny in 1857 but if the history is rewritten, then, we give Paikak Rebellion as the first title of independence that emanated from the land of Odisha. From that heroic land, heroes have come and led India; one of the leaders from them is Biju Patnaik ji, the son of Odisha and the

ideal of four and a half million people. This is the "Biju Janata Dal", which I am representing completely dedicated for the betterment of Odisha. Considering the sacrifices made by Biju babu, Bharat ratna should be conferred to him which will enhance the pride of Odisha and nation.

Sir, my dream is based on reality. If the Central Government extends a hand of active cooperation; Odisha could have been the number one state in India. This potency is there in Odisha. I will emphatically say this.

Sir, I have a lot to say. There is much to learn. This august House is my new school; a place of inspiration for me. I have seen many hon. MPs present in this House, in letters, in pictures, and, today, I see them in my eyes. Many, I revere as my teacher.

I once again convey my gratitude for giving me the opportunity to speak and convey my gratitude to the hon. Members who listened to my maiden speech.

Jai Jagannath, Bande Utkal Janni."

5.00 P.M.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SUJEET KUMAR): The next speaker is Prof. Manoj Kumar Jha. You have 15 minutes.

श्री मनोज कुमार झा (बिहार): वाइस चेयरमैन साहब, शुक्रिया। शुक्रिया उन तमाम सदस्यों का, जो नए चुनकर आए हैं। शुक्रिया इस मेनडेट का भी, जिसने दोनों पक्षों को एक संदेश दिया है। सबका शुक्रिया अदा करते हुए, मैं सबसे पहली बात कहूँगा कि महामहिम के एड्रेस को अंग्रेजी में कहते हैं - "एड्रेस" और हिंदी में कहते हैं - "अभिभाषण"। मैंने बीते वीकंड पर काफी सर्च किया कि "अभि" उपसर्ग लगाने के पीछे मंशा क्या होगी, तो मुझे जितने तत्व मिले, उनसे यह लगा कि कोई बहुत बड़ी चीज़ होगी। मुझे स्मरण हुआ, लोक सभा में प्रो. हिरेन मुखर्जी जी थे। वे कहा करते थे कि अभिभाषण, यानी प्रेज़िडेंशियल एड्रेस पक्ष और विपक्ष को मिलकर लिखना चाहिए। अगर सिर्फ सत्ता पक्ष लिखता है - यह हीरेन मुखर्जी उस वक्त कह रहे थे - तो कोशिश यह होती है कि दृष्टिहीनों को चश्मा पकड़ा दिया जाए। वह हमारी कोशिश नहीं होनी चाहिए। मैंने पिछली दफा भी कहा था। अब यह बदलाव कब होगा, यह मैं नहीं जानता हूँ, लेकिन इस मेनडेट के संबंध में मैं सबसे पहले बोलूँगा और फिर अभिभाषण के संदर्भ में कुछ चीज़ों पर बिंदुवार, पैरा दर पैरा अपनी बात रखूँगा।

वाइस चेयरमैन साहब, मैं उन बातों का बहुत जिक्र नहीं करूँगा, जो उनकी बातों में शुमार नहीं थीं। मेनडेट की बहुत चर्चा हो रही है। मैं उस पर नहीं जाना चाहता हूँ। किसी ने कहा अबकी बार फलाना पार, चिलाना पार, हमने यह कहा, लेकिन मेनडेट दोनों के लिए एक बात कहता है। उधर मेनडेट कहता है कि मैं, मेरा, मुझको की सीमा होती है, आत्ममुग्धता की सीमा होती है, व्यक्ति केंद्रित विमर्श की सीमा होती है। लोकतंत्र में सामूहिकता बहाल होनी चाहिए और हमारे

लिए संदेश है कि आपने जो कुछ किया शायद इनफ नहीं था। अगर हम संविधान की किताब हाथ में ले रहे हैं, तो इसके पन्ना दर पन्ना, सफा दर सफा, हरफ दर हरफ हमको जीना पड़ेगा, लोगों को भरोसा दिलाना पड़ेगा। मैं इस मेन्डेट की कुछ खूबसूरत चीज़ें बता रहा हूं। लोकतंत्र में सामूहिकता बहाल हुई है। बीते 10 वर्ष से एनडीए सुनने को कान तरस गए थे। बीते एक महीने में इतनी बार एनडीए-एनडीए सुना, तो दिल को बहुत सुकून हुआ, आप यकीन मानिए। हम विपक्ष में हैं, शत्रु नहीं हैं। व्यक्ति केंद्रित विमर्श से यह मेन्डेट आपको भी बाहर ले आया है। वह बेहद आवश्यक था। मैं लाइटर टोन में एक दूसरी चीज़ कहूंगा। अचानक मुझे लग रहा है कि हमारे प्रिय रक्षा मंत्री जी की जबर्दस्त वापसी हुई है। वे हर मोर्चे पर हैं। इससे बात करनी है, तो रक्षा मंत्री जी, उससे बात करनी है, तो रक्षा मंत्री जी। यह इस लोकतंत्र के लिए सुखद संकेत है।

माननीय वाइस चेयरमैन साहब, मेरा यह कहना है कि नीट को लेकर बहुत बातें हुईं, उस पर मैं नहीं बोलूंगा। मैं अलहदा आदमी था, जब एनटीए बन रहा था, उस समय वहां वेंकैया नायडू जी थे, मैंने ज़ीरो आवर में तीन बार कहा कि इस देश को इस तरह की व्यवस्था परेशान करेगी। यह बीमारी नहीं पालनी चाहिए। वन नेशन वन फलाना, वन नेशन वन ढिमकाना, वन नेशन वन चिलाना - काहे को भैया। कहीं ऐसी स्थिति न हो जाए कि वन नेशन, वन ठेकेदार, वन नेशन, वन कॉन्ट्रैक्टर। ...**(व्यवधान)**... संजय भाई, पूरी तरह नहीं हुआ है, होने की संभावना है। अब यह मैं इसलिए कह रहा हूं, क्योंकि लोग कहते हैं कि इस पर राजनीति मत करो। मैं पूछना चाहता हूं कि क्या लोगों की पीड़ा, परेशानी, 25-30 लाख युवाओं के सपने तहस-नहस हो जाएं? आप विपक्ष से क्या उम्मीद करते हैं - आपकी ऑर्केस्ट्रा में शामिल होकर कहे कि साहब तेरे सुबह की जय, साहब तेरे शाम की जय। नहीं, विपक्ष को अपना काम करने दीजिए। अगर आपने ईमानदारी से एनटीए का मूल्यांकन किया होता, आपने पहले दिन हड़बड़ी में क्लीन चिट नहीं दी होती, तो आज ये नतीजे न होते।

सर, एक वर्धा विश्वविद्यालय है, मैं आपके माध्यम से कहूं - यहां हमारे माननीय हेल्थ मिनिस्टर और लीडर ऑफ दि हाउस हैं - सर, वर्धा यूनिवर्सिटी में बहुत बड़ा फर्जीवाड़ा चल रहा है। आप जांच करवाइएगा। आप पावरफुल लोग हैं। हमारे पास पावर नहीं है। हम आपसे आग्रह कर सकते हैं। मैं यह आग्रह कर रहा हूं कि महात्मा गांधी के नाम पर वहां विश्वविद्यालय में जो हो रहा है और गांधी जी के लिए जो चीज़ त्याज्य थीं, वे सारी चीज़ें उस विश्वविद्यालय में हो रही हैं। परसों TISS में क्या हुआ? इस सभी चीज़ों की हमें चिंता होनी चाहिए। आज आप सत्ता में हैं, कल हम सत्ता में होंगे, लेकिन अगर देश के सरोकार ही रुग्णावस्था में चले जाएंगे, बीमार पड़ जाएंगे, तो फिर क्या बात, फिर कौन सी राजनीति, फिर कौन सी समाज नीति।

युवाओं के रोजगार पर मैं ज्यादा नहीं बोलना चाहता हूं, इस पर बहुत लोगों ने बोला है। सर, मैं बिहार से आ रहा हूं और मैं पूरे चुनाव के दौरान बिहार में था। बिहार में हमें भले ही सीट्स कम आई हों, लेकिन बिहार का युवा, चाहे वह किसी भी जाति का हो, उससे नौकरी के बारे में पूछिए, तो नौकरी का मतलब तेजस्वी। हमने वहां मयार बदला, वहां पर चिंतन बदल दिया, धारा बदल दी। ...**(व्यवधान)**... आपकी मर्जी है, आप कुछ भी कहिए, आप तो जज भी हैं, इन्वेस्टिगेटिव एजेंसी भी हैं। ...**(व्यवधान)**... मैं हाथ जोड़कर विनती करता हूं कि जितनी गालियां मुझे देनी है, अपने भाषण में दे दीजिएगा। खूब दीजिए गाली, हम गाली सुनने के आदि हो गए हैं। फिर सुन लेंगे आपसे गाली, लेकिन मुझे कुछ बातें रखने दीजिए। ...**(व्यवधान)**...

सर, NIOS, D.El.Ed. का मसला है। आप ही ने बनाया, आप ही ने उसको delegitimize कर दिया। हजारों बच्चे भटक रहे हैं। शिक्षा प्रेरक का वही हाल है। मैं यह कहना चाहता हूँ कि देश में चुनाव के दौर में बहुत बुरा हुआ। भैंस, मंगल सूत्र, मुजरा, टोंटी तोड़ ले जाएगा, बिजली काट देगा, हम लोग परेशान हुए। मैं बैकरूम से चुनाव देख रहा था, इलेक्शन कमीशन को complaint कर रहा था, अभिभाषण में जिसको दाद दी गई है। सर, मैंने complaint first phase में की, परसों उनका मेल आता है, day before yesterday कि अपना नाम, पता, असेम्बली नंबर, मोबाइल नंबर भेजिए। अब किस बात के लिए? ये व्यवस्थाएँ हैं। इलेक्शन कमीशन की credibility पर एक सर्वे हुआ, जिसके अनुसार सिर्फ 28 परसेंट लोगों का भरोसा है। इससे ज्यादा भरोसा तो पंचायत वेबसीरीज में फुलेरा के ग्राम प्रधान का है! हम लोगों को यह सोचना चाहिए।

सर, mathematical length of tenure के आधार पर नेहरू बनाने की कोशिश हो रही है। सर, mathematical length of tenure से नेहरू नहीं बनता। नेहरू बनता है, जो गर्म हवा को पी सके, दूसरे के ज़ख्म को देख कर उस पर मरहम लगाए, ज़ख्म कुरेदे नहीं, ज़ख्म पर नमक न छिड़के, वह होता है नेहरू।

सर, मैं आपको एक छोटी चीज बताऊँ। जातिगत जनगणना की माँग की गई थी, हमारे जद(यू) के साथी भी अभी हैं, मंत्री जी, प्रणाम, उसमें हमारे जद(यू) के साथी भी थे। नीतीश जी और तेजस्वी जी ने मिल कर सर्वेक्षण कराया।

[उपसभाध्यक्ष (श्रीमती रजनी अशोकराव पाटिल) पीठासीन हुईं]

मैडम, यह कोर्ट में आया। यहाँ कोर्ट में कौन खड़े हुए? क्या मैं नाम लूँ? सॉलिसिटर जनरल ने इसको रोकने की कोशिश की। यह किसके इशारे पर हो रहा है? एक तरफ आप कहते हैं कि वंचितों का कोई नुकसान नहीं होने देंगे और दूसरी तरफ आप इस प्रकार की कोशिशें करते हैं। आज बिहार की सबसे बड़ी माँग है कि सर्वेक्षण के बाद जो आरक्षण का आधार बढ़ाया गया, उसको नौवीं अनुसूची में डालिए। अभी पटना उच्च न्यायालय का एक निर्णय आया है। हम बिहार की सरकार से इंतजार करते रहे हैं कि वह इसको challenge करे, नहीं तो राष्ट्रीय जनता दल petition लेकर सुप्रीम कोर्ट जाएगा।

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री राम नाथ ठाकुर): बिहार सरकार सुप्रीम कोर्ट जाएगी।

श्री मनोज कुमार झा (बिहार): सर, आप बोल दीजिएगा, अभी तक गई नहीं है, मुझे भी जानकारी है, मैं इसको बहुत closely follow कर रहा हूँ।

अभी महामहिम ने majority की बात की, मैं उस पर शुरू में बोल चुका हूँ, legislative majority को हमेशा moral majority के सापेक्ष रखना होगा। अगर आप moral majority से नहीं चलाते हैं, तो legislative majority, जिस दिन साइकिल पर तीर सवार हुआ, यह उड़ जाएगा। साइकिल टीडीपी का चुनाव चिह्न है और तीर हमारे राम नाथ भाई का, जनता दल (यूनाइटेड) का चुनाव चिह्न है।

देखिए, कभी-कभी mandate कितना खूबसूरत काम करता है। मैं बचपन से बीजेपी को follow कर रहा हूँ। मैं सारी पार्टिज़ को follow करता हूँ, बीजेपी को भी कर रहा हूँ। बीजेपी का संकल्प पत्र हुआ करता था, इस बार वह हो गया था - मोदी जी की गारंटी। ये democratization का जो mandate है, इससे आपको बहुत बड़ा फायदा है। व्यक्ति के समक्ष कोई भी दल समर्पित न हो जाए, मैं समझता हूँ कि यह उपलब्धि आप लोगों की भी है। ...(व्यवधान)... आरजेडी व्यक्ति की गारंटी नहीं लिखती है। ...(व्यवधान)... Madam, protect me. ...(Interruptions)... Madam, I need your protection. ...(Interruptions)... I have 15 minutes. ...(Interruptions)... Would you care to sit down, Sir? ...(Interruptions)... मैडम, मैं हाथ जोड़ रहा हूँ।

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती रजनी अशोकराव पाटिल): आप ज़रा बीच में मत बोलिए।

श्री मनोज कुमार झा: यह तरीका नहीं है। लीडर ऑफ द हाउस, क्या ऐसे चलेगा?

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती रजनी अशोकराव पाटिल): आप बीच में मत बोलिए, प्लीज़।

श्री मनोज कुमार झा: मैडम, मैं कभी किसी को टोका-टोकी नहीं करता हूँ। सच चुभने लगता है। ...(व्यवधान)... मैडम, मैं President's Address का fifth paragraph दिखाना चाहता हूँ। इसमें 'growth story' कहा गया है। सुन कर अच्छा लगता है। What kind of growth? कैसी प्रगति, कैसा विकास? Joblessness, hopelessness, facelessness और आप चाहते हैं कि उस economic prosperity के पक्ष में हम ताली बजाएँ। मैडम, मेरी यह कांस्टीट्यूशन की किताब है, संभवतः इसे सबसे पहले मैंने दिखाना शुरू किया था। हमारी फाइनेंस मिनिस्टर निर्मला जी अभी यहाँ नहीं हैं। हर बजट के बाद मैं आर्टिकल 39 पढ़ता था। Concentration of wealth - क्या इसका कोई blueprint है कि यहाँ आय की जो असमानता है, वह इस देश को लील रही है? ताली बजा रहे हैं। 5 क्रोनी पूँजीपति तरक्की कर रहे हैं, उसको देश की तरक्की मान रहे हैं। कभी उस युवा से पूछिए, वह देश की तरक्की को कैसे देख रहा है। वह ऐसा जवाब देगा कि हैंडल करना मुश्किल पड़ेगा।

मैडम, पैरा 16 में बाबा साहेब को selectively quote किया गया। यह selective quote बड़ी परेशानी की चीज है। अगर आप semi-colon के बाद किसी को quote कर दें और उसके पहले की बात छोड़ दें, इसको हम लोगों की भाषा में, academics में कहते हैं - almost akin to plagiarism. वह किया गया। प्रधान मंत्री जी ने चुनाव के वक्त कहा कि एक ही जाति है, वह है - गरीबी। सुनने में यह शायराना लगता है, खूबसूरत लगता है, फिल्मी लगता है, लेकिन ऐसा क्यों है कि जातिगत hierarchy में नीचे जाते हैं तो गरीबी बढ़ती है और ऊपर जाते हैं तो गरीबी घटती जाती है? मैं समझता हूँ कि यह NFS (None Found Suitable) चिन्ता का विषय है। अभी अनुप्रिया पटेल जी को चिट्ठी लिखनी पड़ी है। मैं बताऊँ, यह एक मानसिक रोग है, जो विश्वविद्यालयों में None Found Suitable करता है। अगर हमने इस मानसिक रोग से डील नहीं किया, तो हमारी कथनी और करनी में मीलों का फासला होगा।

मैडम, यह कहा गया कि पहले की कुछ सरकारें unstable थीं, लेकिन अगर आप pro-people legislation का विश्लेषण करें, तो सबसे ज्यादा खूबसूरत क्षण so-called coalition Government में आया है। मुझे उम्मीद है कि आपकी इस coalition Government को भी उस प्रेशर को समझते हुए pro-people legislation पर काम करना पड़ेगा। To begin with, 'अग्निवीर' को, सेना में भर्ती को पुराने तरीके पर लाइए, ताकि युवाओं के साथ न्याय हो पाए।

मैडम, भारतीय न्याय संहिता आज से लागू हो गयी है, लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि यह 150 सांसदों के निलंबन के साथ पास हुआ है, इसमें कोई चर्चा नहीं हुई है। यह एक कदम है - police state की ओर, एक Orwellian state की ओर। इससे मैं आगाह करता हूँ, क्योंकि हमेशा आप वहाँ नहीं होंगे। जब यहाँ होंगे, तब यही दंड-प्रावधान लागू होंगे। ...**(व्यवधान)**... अभी और सुनिए। ...**(व्यवधान)**...

Para 26 mentions that disruptive forces are conspiring to weaken democracy. यह महामहिम से कहलवाया गया। ये Stan Swamy कौन थे, वे कैसे इस दुनिया से गुजर गए? क्यों आज भी उमर खालिद, मीरान हैदर, खालिद सैफी जैसे जवानों द्वारा सरकार की आलोचना को देश की आलोचना बना दिया गया? मेरे पास ये दो किताबें हैं। अगर ये किताबें मेरे पास आती हैं, तो उन्हें नड्डा जी के कार्यालय में भी पहुँचना चाहिए - 'The Incarcerations' by Alpa Shah and 'Challenging Caste' by Ajaz Ashraf. ये दास्तानें हैं कि how democracy is being muzzled.

वाइस चेयरपरसन मैडम, मैं अपनी बात कहने में ज्यादा वक्त नहीं लूँगा। इमरजेंसी पर बात हुई। सचमुच वह बहुत बुरा अध्याय था, लेकिन मुझे लगता है कि इंदिरा जी के एडवाइजर बहुत स्मार्ट नहीं थे। अगर वे आज की तरह के होते, तो कहते कि आर्टिकल 352 की जरूरत भी नहीं है, हम ऐसे ही बना देंगे। यह फर्क है।

मैडम, मैं आखिर में यह कहूँगा कि यह जो चुनावी विमर्श है, इसकी वजह से समाज में बहुत जहर है। लिंगिंग चल रही है। मैं कितने विजुअल्स बताऊँ? आज से तीन दशक पूर्व, मुझे स्मरण है कि राही मासूम रज़ा ने एक छोटी सी कविता लिखी थी। मैं यही कह कर अपनी बात खत्म करूँगा। उन्होंने एक कविता लिखी थी। वे 'आधा गाँव' के लेखक थे। कई लोग उनको 'महाभारत' के लेखक के रूप में भी जानते हैं। उनके लिए 'गंगौली' और 'गंगा' उनकी माँ थी। यह था - एक भारतीय मुसलमान का चित्रण। उन्होंने लिखा था :-

" मेरा नाम मुसलमानों जैसा है,
मुझको कत्ल करो और मेरे घर में आग लगा दो
मेरे उस कमरे को लूटो जिसमें मेरी बयाने जाग रही हैं,
और मैं जिसमें तुलसी की रामायण से सरगोशी करके
कालीदास के मेघदूत से यह कहता हूँ
मेरा भी एक संदेश है।"

अब दूसरा, यह साढ़े तीन दशक पूर्व लिखी गई। यही कह कर मैं अपनी बात समाप्त करूँगा। यह पूरे देश का चित्रण है। यह हम सब के लिए आईना है।...**(समय की घंटी)**... मैडम, मैं बस 30 सेकंड और लूँगा। इसको अदनान कफ़ील दरवेश नामक एक युवा कवि ने रघुवीर सहाय को याद करते हुए 'वरना मारे जाओगे' शीर्षक से लिखा है, जो इस प्रकार है :-

"मत भूलो कि तुम मुसलमान हो
 बस लोगों को छलावा देते रहो कि तुम मुसलमान नहीं हो
 वरना मारे जाओगे
 राह चलते खयाल रखो
 कि कहीं तुम्हारी क्रमीज़ से
 मुसलमान होने की बू तो नहीं आ रही
 खयाल रखो किसी से बहस करते हुए
 कुछ बोलते हुए
 कुछ करते हुए
 यहाँ तक कि हँसते और रोते हुए भी
 कि कहीं तुम मुसलमान तो नहीं लग रहे
 वरना मारे जाओगे
 ये बात हमेशा याद रखो कि तुम एक मुसलमान हो
 और तुम मरोगे नहीं
 एक दिन
 मारे जाओगे!"

विवेकहीनता, तर्कहीनता के समाज को ध्वस्त करिए। आइए, हिन्दुस्तान बनाएँ, वह हिन्दुस्तान, जहाँ कोई फर्क न हो, गले लग सकें, यह नहीं कि चुनावी मंच से कुछ, जमीन पर कुछ। जय हिन्द, मैडम।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI RAJANI ASHOKRAO PATIL): Now, Shri K.R. Suresh Reddy.

SHRI K.R. SURESH REDDY (TELANGANA): Madam Vice-Chairman, what is the time allocated to our Party? We will try to share it amongst our Members.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI RAJANI ASHOKRAO PATIL): It is twenty minutes.

SHRI K.R. SURESH REDDY: Madam, on behalf of the BRS Parliamentary Party, we thank the hon. President, Shrimati Droupadi Murmu *Garu* for her Address. We also take this opportunity to congratulate Shri Om Birla *Garu* for being elected as the hon. Speaker of Lok Sabha. I, on my behalf, thank you for giving me this opportunity. We appreciate the hon. Prime Minister for graciously introducing his Council of Ministers to this august House.

Madam, the election results reflected the pluralistic character of our nation. If I need to say on what the verdict for the NDA says, it clearly indicates that some

promises have not been met, aspirations totally not fulfilled but confidence not lost. When I look towards the I.N.D.I.A. group, we get a feeling that the verdict says that the depleting strength would stop, dependence would increase; continue to fight and your day will come. The dance of democracy was quite visible -- whoever coined it - - because every political party celebrated this wonderful election.

Since we are still under cricketing fervour, if I need to put it in a cricketing analogy, the batsman who is caught out on 99 gets a lot of sympathy. The sympathy given to the batsman is to perform better, not to be discouraged and, definitely, in the next innings, you would score your century, so continue to play hard. Then, to the batsman, who hit a double century, they say: "Well played but still you fell short by 32 runs. So, over-confidence may not do well but thanks to the Duckworth Lewis Method, you won the match. But don't always pray for a rainy day because you need to continue to work with the commitment as to what you have promised." Between both the groups, then, there is a third non-aligned group like us. We don't look this side, we don't look that side but we try to give constructive suggestions this side and we try to support them whenever we feel something goes wrong there. A lot of people felt that since we lost the elections, we have no role to play but we were not born to win elections. Regional parties like us were born to fulfil the aspirations of our region. We were born to fight for the cause of the people. Our strength might deplete or increase but our struggle for our region will continue and our responsibility towards the nation, through our interventions in this House, will continue. I have seen since morning the hon. Chair looking left, looking right, struggling to find some peace. जब लेफ्ट-राइट नहीं चलता है, तो सामने देखिए। We are there for the Chair. We are there to support the Chair. It is not that we have a big number but we can assure you that we will never be a pressure group but we will always be a pleasure to work with. Madam, the speech started off by speaking about the Constitution. It is said in the speech 'that even after the Constitution came into force, it was attacked many times.' It was attacked many times but, unfortunately, it continues to be attacked and to quote examples, the biggest challenge in this polity today, according to us, is of the anti-defection. We have seen hon. Members swearing in the name of Constitution. We have seen the Ruling Party talking about the Constitution and we have heard the debates of how the Constitution is violated through anti-defections. It happened in Maharashtra yesterday. They were blaming this side and, now, today, it is happening in Telangana and they are responsible for it. So, the time has come where anti-defection needs a fresh look. When the Parliament and the legislatures, with a responsibility bestowed upon them, to tackle the issue is not handled or is not taken in the right course then we see the courts' intervention. We have seen

intervention of the high courts and we have seen the Supreme Court intervening. I am neither a lawyer by profession nor I have read much law because I was always influenced. I started my political, legislative career at a young age of 27 years. I was always inspired by the hon. Speaker's words who always said and advised that applying common sense is the best method to move forward in this House. So, I am not really a guy who really looks into the legality but the anti-defection issues are cropping up very frequently and are going to the Supreme Court. I was reading about the Supreme Court's observation and judgement invoking Article 142, say, in the case of Manipur; a Member gets elected from one party, joins the other party and becomes a Minister. The matter goes to the hon. Chair, they don't decide. So, the matter has to go to the Supreme Court which had to invoke Article 142 to settle the issue. I believe that Article 142 is what they call it complete justice. Complete justice happens there when total failure happens here. We talk of judicial activism but we should also realize legislative realism, the responsibility bestowed upon us that when we do not discharge, then these things happen. It is happening today. We have seen in Telangana that a legislator got elected from one party and two months' later in the Lok Sabha elections, he contested from the other party. When we go to the hon. Chair, they do not respond, so, the only method left is to go back to the court. Well, I can, definitely, name the parties. The matter is not naming the parties. It is the attitude which needs to change and it is the august House which has to rise to the occasion, and when the Constitution has so clearly defined that given the provisions and given the authority to decide, we have not decided.

Madam, I need to say but this is, especially, happening in the 75th year of our Republic, when we are celebrating our Constitution and this matter is not something new. It has been happening for a while. It happened in Manipur. It is happening in Telangana. It happened earlier in Goa and it happened in Uttar Pradesh. It is being happening and various recommendations have come in. I would like to take the opportunity to put forward before the House various Committees. The National Commission to Review the working of the Constitution noted the defection flaws. They observed it but we didn't act on it. The Dinesh Goswami Committee on Electoral Reforms advised but we did not apply our minds on that. The Halim Committee Report on review of anti-defection recommended specifically the term 'voluntarily giving up the membership'. They wanted a very specific and clear definition of the term because that is the term which is expanded and interpreted in many ways. So, that was recommended. That was not done. The Law Commission of 2015 recommended that the power to decide should vest with the President or Government, who should act on the advice of the Election Commission. So the Law

Commission probably felt that the legislator is not acting, so it is time to move it out of that and then get it to the Governor or the hon. President. Then we have seen the Supreme Court in 2020. The anti-defection does not specify a time-limit for Speaker or Chairman for the disqualification petitions which need to be decided. They felt that three months should be the period by which it has to be decided and that time was given to the hon. Speaker, I think in Manipur, which was not followed and, ultimately led to Article 142 coming into play there. Anti-defection has not only been India's concern, Madam. It has been a concern in the Commonwealth of Nations. It has been a concern in the IPU. Whenever conferences are being held, there has been a debate and it is the Chair's intervention. During one of the Commonwealth Conferences, a committee was constituted. The Committee which was headed by Mr. Malhotra submitted a report way back, I think in 2005 and from 2005 to now, we have not much moved in the direction as per the recommendation.

Last but not the least and the most important was the Congress manifesto of 2024 which said that the Tenth Schedule Amendment would be done and automatic disqualification will be coming into play. While they said it, it is most welcome. Having said that, within a month, the same party has violated it. Khargeji today pointed out as to how the BJP Government has been making the small State Governments' fall, but here, we have seen the Congress party making the oppositions weaken and devouring the opposition regional parties. This, in my view, speaks of double standards and this, in my view, should be looked into.

There is another major issue which has been in front of our country, that has been the pre-poll alliances. We have seen the NDA, we have seen the INDIA group fighting, as pre-poll alliances. In anti-defection, once you fight as a pre-poll alliance, then, definitely, you need to stick to even post-poll because the mandate given is for pre-poll. This is my view. Legally and as when the committees come up, they need to look into these matters, Madam, which is very, very critical. How does the world look towards India? The world does not see India only as a five trillion dollar economy. They see it more as a one billion plus democracy.

(MR. CHAIRMAN *in the Chair*).

They see it is an agile democracy, not as a fragile economy. This has to continue. If we have become a *Vishwa Guru* in many aspects, then why not become a *Vishwa Guru* even in strengthening the democratic institutions and no better time than now, especially, in the 75th year of our Constitution celebration. While the Government should listen to the opposition's voice and the opposition definitely should continue to listen to the counsel, advice of the Government. With your kind permission, let me

quote what Babasaheb Ambedkar said when they thought about the parliamentary system. Sir, he said and I quote, "Where the parliamentary system prevails, the Executive is held responsible on a daily and periodic basis. The daily assessment is done by the Members of Parliament through Questions, Resolutions and other debates. Periodic assessment is done by the electorate. The daily assessment and responsibility is far more effective and much more necessary in a country like India." This we have seen. All the hon. Members have experienced it. To quote a small couple of examples, be it in the Parliament or be it in the legislatures, there is importance of every issue raised in the House. If a question is put, say something regarding a bridge in my Nizamabad district, it does not concern only a bridge of Nizamabad district, when the question is answered here. When the question is admitted, hon. Chairman, Sir, the entire department gets active. The Minister doesn't see on a day-to-day basis. The head of the department doesn't see the issue on a day-to-day basis. But when a Parliament or a legislative question is posed, the entire bureaucracy gets alert. The matter gets settled. Along with it, so many issues get to be solved. So, this is where a functioning of Parliament not only lives to the true spirit, but it also helps the Government on its functioning. It keeps the bureaucracy alert and eventually, the issues related to the people are solved. Today, the role of the Parliamentary Committees! Sir, 17th Lok Sabha, as functioned, has passed some historic legislations. At the same time, when we see the kind of Bills referred to the Committees, much needs to be done in that regard. So, today, I hope in the new beginning, the hon. Prime Minister, when he comes and replies, definitely, he will dwell on this subject that he will assure the Chair that the Parliament will run and with the Government cooperation, and the country will be proud if he says, 'यह मोदी की गारंटी है।' Then, definitely, it will be very much appreciated, Sir. The Address also spoke about competitive and cooperative federalism. Now, in the changing scenario, competitive is well said, much needed, but provided it is taken up in letter and spirit.

Mr. Chairman, Sir, I come from the State which probably is a shining example for competitive federalism. We have set benchmarks. We have excelled in areas. And, when we started, everybody felt that we will not survive for too long. Prophets of doom said it is a matter of time before they collapse. But, today, Telangana, if I may quote, Chairman, Sir, in every parameter set by NITI Aayog or by Government of India, we have excelled. For example, the *Nari Shakti* empowering woman, Telangana has become a role model in giving pensions to the old people, pensions to the lady workers, pensions to the destitute and single woman, women reservation in local bodies. And, in the very first Session of the Telangana Assembly, we gave the reservation for women. As far as for the weaker sections, SC and ST, we started the

Dalit Bandhu, which really empowers the weaker, SC unemployed, the 10 per cent reservation for STs, the forest land pattas, free power for ST colonies, made ST hamlets into gram panchayats, fund provisions for ST entrepreneurs and, Chairman, Sir, we have created new districts. It is only not the Telangana State which was our aspiration but per capita governance was the key and to deliver that... *...(Time-bell rings)*... Sir, I will take just two-three minutes more, and I will be done, Sir. So, Telangana should be a role model for the entire country. Having said this, and finally, Sir, I will come to the Election Commission. The Election Commission's performance, of course, we all congratulate them. But the fact is about the EVM. There have been certain apprehensions about the functioning of EVMs. The Election Commission is bounded by commitment to ensure that whenever such issues/doubts come out, they should be free to open up it for discussion and ensure that the transparency is done. *...(Time-bell rings)*... Sir, only last line. But, what I would like to suggest here is, earlier when ballot papers were there, the entire ballot papers were mixed, entire constituency was mixed. So, people had no idea कि कौन से गांव में किसने किधर वोट दिया। But, today, the EVM specifies, in a village, if there are about 2,000 voters, it says for 1,000 voters one EVM, and for other 1,000 voters, another EVM. *...(Time-bell rings)*... So, this has to go. And for this, there was a recommendation. Sir, that recommendation may kindly be looked into and let me thank you for the time given to me.

श्री सभापति: श्री अजीत माधवराव गोपछड़े ।

डा.अजित माधवराव गोपछड़े (महाराष्ट्र): आदरणीय सभापति महोदय, मैं महाराष्ट्र के आराध्य दैवत रायगढ़ का राजा छत्रपति शिवाजी महाराज, परम पूज्य बौद्धिस्त महामानव डा. बाबा साहेब अम्बेडकर जी और श्री गुरु गोबिंद सिंह जी की कर्मभूमि से आता हूं। मैं एमबीबीएस, एम.डी. हूं। मेरे माता-पिता किसान हैं और अभी भी वे खेती करते हैं। आज इस सदन को मैं अवगत कराना चाहता हूं कि आज National Doctor's Day है। हम सभी जन एक-दूसरे की टोका-टाकी में, दुनिया की सारी medical fraternity को भूल गए हैं, जिन्होंने कोरोना के संकटकाल के समय में, हमारे प्रधान मंत्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सभी पैथी के डाक्टर्स - Paramedicals, Dentists, Chemists, Pharmacists, Compounder, Arogya Sevak, Asha workers, Anganwadi Sevikas, Police, Ambulance drivers, सुरक्षा व्यवस्था के सभी भाई-बहनों ने एक अभूतपूर्व सेवा कार्य की आहूति दी है। इन लोगों द्वारा देश की सेवा करते समय, समर्पित भावना करते समय, काफी लोग शहीद हुए, कई कोरोना योद्धाओं ने बलिदान दिया। इन सभी भाई-बहनों को, मैं एक डाक्टर के नाते से, चिकित्सा क्षेत्र के नाते से, राज्य सभा का सांसद होने के नाते से, इस सदन की तरफ से अंतःकरणपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनका विनम्र अभिवादन करता हूं और जिन्होंने यह काम किया है, मोदी सरकार के नेतृत्व में, उन सभी मेरे

भाई-बहनों का मैं अभिनंदन करना चाहता हूँ। माननीय सभापति महोदय, इस गहरे संकट में Allopathy, Ayurveda, Homoeopathy, Naturopathy, Unani, योग शिक्षक - इन सभी क्षेत्रों के योद्धाओं ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया और देश की सेवा की है। माननीय प्रधान मंत्री जी के holistic India के आह्वान पर प्रत्यक्ष रूप में इन सभी पैथियों ने एक-दूसरे के हाथ में हाथ डालकर सेवा कार्य का सही रूप साकार करके पूरी दुनिया को दिखाया है। मैं सदन के माध्यम से बताना चाहता हूँ कि इन सभी पैथियों ने एक holistic India का, हमारे मोदी जी का सपना साकार किया। इसलिए इन सारी पैथी के लोगों का आज मैं इस सदन में अभिनंदन करना चाहता हूँ।

माननीय सभापति महोदय, माननीय प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में कोरोना काल में टीकाकरण, vaccination को Mission mode में लाकर सभी हिंदुस्तान के नागरिकों को मुफ्त में दिया गया। हमारे doctors, researchers, medical साइंटिस्ट और वैज्ञानिक शोधकों की टीम की मैं बहुत-बहुत सराहना और अभिनंदन करना चाहता हूँ। माननीय प्रधान मंत्री जी ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का सही संदेश पूरी दुनिया को कोविड वैक्सीन देकर दिया है कि हम सिर्फ बोलते नहीं हैं, हम करके भी दिखाते हैं। मानवता का सही परिचय पूरी दुनिया को माननीय मोदी जी और उनकी सरकार ने कराया है। मोदी जी की सरकार का हम सब आज यहां अभिनंदन करते हैं और कृतज्ञता व्यक्त करते हैं कि उन्होंने हिंदुस्तान का एक मॉडल पूरी दुनिया को दिया। हमारी सरकार ने कभी मित्र नहीं देखा, कभी दुश्मन नहीं देखा और वैक्सीन को जिस देश ने मांगा, उस संजीवनी को जिसने मांगा, उसको दिया। मेरे विपक्ष के भाईयो-बहनो, उस समय आपने इस वैक्सीन का विरोध किया था, इसका बहिष्कार करने की भाषा बोली थी और हमें यह अच्छा नहीं लगा। आपने बहिष्कार करने की भाषा की और रात में छुपकर वैक्सीन लगवा ली। लेकिन भाइयो और बहनो, यह मोदी जी की सरकार की कृपा है कि हम सब लोग आज जीवित हैं। आज यहां पर एक अच्छी आरोग्य की व्यवस्था हुई है। मैं माननीय प्रधान मंत्री जी का बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ कि उनकी सरकार ने गरीब, वंचित, पीड़ित, दलित, आदिवासी, माताओं-बहनों के लिए 'प्रधान मंत्री जन औषधि' परियोजना के माध्यम से बहुत कम पैसों में उच्चतम दर्जे की औषधि देकर हिंदुस्तान में क्रांतिकारी पहल की है। हमारे सारे लोगों को यह विषय उठाना चाहिए। सभापति महोदय, राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर चर्चा चल रही है और हम यहां पर एक-दूसरे के साथ झगड़ा कर रहे हैं।...(समय की घंटी)... मैं दो-तीन मिनट में ही अपनी बात समाप्त करना चाहता हूँ।

श्री सभापति: आपके पास 30 सेकंड का समय है।

डा. अजित माधवराव गोपछड़े: माननीय प्रधान मंत्री जी के माध्यम से 'जन आरोग्य योजना', 'आयुष्मान भारत योजना', 'मातृ वंदना योजना' का लाभ करोड़ों माताओं को, सभी गर्भवती माताओं को, नवजात शिशुओं को मिल रहा है। माननीय मोदी जी की सरकार में नए मेडिकल कॉलेज, एम्स, आयुर्वेदिक कॉलेज, नेचुरोपैथी कॉलेज, नर्सिंग कॉलेज, डेंटल कॉलेज, फार्मसी कॉलेज खुले हैं।

माननीय सभापति महोदय, प्राथमिक आरोग्य केंद्र, सिविल हॉस्पिटल तथा मेडिकल कॉलेज.. (समय की घंटी).. एक त्रिस्तरीय योजना हिंदुस्तान में यशस्वीरित्या से तैयार हो रही है।

MR. CHAIRMAN: Please, you have made your point.

डा. अजित माधवराव गोपछड़े: सर, मैं एक बात कहना चाहता हूँ। आज डॉक्टर्स डे है।..(व्यवधान).. महोदय, मैं एक आखिरी बात बोलना चाहता हूँ कि सभी डॉक्टर्स से लेकर आशा वर्कर्स, आंगनवाड़ी सेविकाओं ने मोदी जी के नेतृत्व में पूरे हिंदुस्तान का नाम एक ग्लोबल लीडर के रूप में बनाया है। ..(व्यवधान)..

MR. CHAIRMAN: Now, Dr. John Brittas.

डा. अजित माधवराव गोपछड़े: सर, यह मेरी मेडेन स्पीच है। सर, मैं आपसे केवल इतनी विनती करता हूँ।..(व्यवधान)..

MR. CHAIRMAN: Now, Dr. John Brittas. eight minutes.

DR. JOHN BRITTAS (Kerala): Mr. Chairman, Sir, let me just quote from the oath the hon. Prime Minister and the Ministers take: 'I will do right to all manner of people in accordance with the Constitution and the law without fear or favour, affection or ill-will.' Our Prime Minister must have taken this oath at least six times as the Chief Minister and also as the Prime Minister. सर, इस बात और काम का फर्क क्या है? * Is it not a fact that he was violating the oath he had taken? So much had been spoken about this by the hon. Members here. I would request the BJP Members to change the symbol of lotus to bulldozer. Now, you use bulldozer. The other day also, in Moradabad, five houses were demolished. Sir, bulldozer has become the symbol. I would not speak about the narrative that was created by the BJP during the elections. Last time, on the discussion on the Motion of Thanks, I had said it - ये श्रीराम आपके साथ नहीं हैं, आप नाथूराम के साथ थे। अभी चुनाव में आपने देखा है कि श्रीराम ने तो आपको छोड़ दिया है। You have been defeated thoroughly. In Faizabad, all the gods have deserted you and it has been shown to you. Sir, on *praan pratishttha*, I also spoke last time saying that the duty of the Prime Minister is to give *praan* to the citizens. He should have gone to Manipur to give *praan* to the people and आजीविका देना आपका कर्तव्य था, लेकिन वह दिया नहीं है। Life and livelihood should have been given to the people instead of god. You can't * the god, Sir. There were instances when the Prime Minister was meditating. वे उसी वक्त ट्वीट करते हैं। सर, टेक्नोलॉजी इतनी बदल गई है, इस देश में क्या हो गया है! When you are meditating, simultaneously you are tweeting! Sir, *Pareeksha pe Charcha* was something which was discussed. मैंने उसी वक्त सोचा था कि यह लीक हो

* Expunged as ordered by the Chair.

रहा है। सब परीक्षाएं गड़बड़ी में हैं। You destroyed the fundamentals of the federalism. सब छीन लिया है। *

MR. CHAIRMAN: This will be deleted.

डा. जॉन ब्रिट्टास: सर, आप एक्सपंज कर दीजिए।..(व्यवधान)..

MR. CHAIRMAN: Dr. John Brittas...

DR. JOHN BRITTAS: Sir, RSS is not unparliamentary.

MR. CHAIRMAN: Are you that unaware of the system? Can you substantiate it?

DR. JOHN BRITTAS: Okay, Sir.

MR. CHAIRMAN: This is objectionable and you have an informed mind. ...*(Interruptions)*...

DR. JOHN BRITTAS: The dreams of millions of people have been shattered. I have been pleading with this Government to entrust the State Governments to conduct tests. I studied in JNU. JNU has been conducting the tests for fifty years without any leak. Now, you have introduced CUET. The only reason why you introduced CUET was because you have seen a lot of south Indians getting admission in Delhi University. †...*(व्यवधान)*...

MR. CHAIRMAN: Dr. John Brittas, nothing will go on record. ...*(Interruptions)*...

DR. JOHN BRITTAS: Okay, Sir. Let me just speak.

MR. CHAIRMAN: Dr. John Brittas, just one second.

DR. JOHN BRITTAS: Sir, please give me time. ...*(Interruptions)*...

† Not recorded.

MR. CHAIRMAN: Take your seat. You started with a very lofty quote of the Oath and look at where you have landed! In a country like ours which is one, you are raising a different kind of voice! ...*(Interruptions)*... I strongly condemn it. ...*(Interruptions)*... Please go ahead. ...*(Interruptions)*...

DR. JOHN BRITTAS: Sir, the education ...*(Interruptions)*... नीरज भाई, सुन लीजिए। ...*(व्यवधान)*...

MR. CHAIRMAN: You have to address the Chair. ...*(Interruptions)*...

DR. JOHN BRITTAS: Sir, education for you is to invent new past, because every fascist believes that those who controls the past will control the future. For you Babri Masjid, मैंने प्रफुल्ल पटेल साहब से भी बात की थी। आपके लिए अभी यह बाबरी मस्जिद नहीं है, three-dome structure है। अब तो हिस्ट्री बदल गई है। Babri Masjid has been obliterated from the history of India. * Our students would be studying that history, Sir!

Sir, on competitive, cooperative federalism, the hon. Prime Minister has said that...

MR. CHAIRMAN: One minute, Dr. John Brittas. Take your seat. Are you aware of what you are talking? This is the House of Elders.

DR. JOHN BRITTAS: Sir, please allow me. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: No. This is the House of Elders. We have to talk sense. ...*(Interruptions)*... You are talking things out of your imagination! Are you imagining? You are in some kind of fancy! Please confine to substance. Please, speak. ...*(Interruptions)*...

DR. JOHN BRITTAS: Sir, competitive, cooperative federalism, नीरज भाई, सुनिए, सुनिए। ...*(व्यवधान)*...

MR. CHAIRMAN: Neeraj ji, no cross-talk.

DR. JOHN BRITTAS: In the name of competitive, cooperative federalism, all powers of the States have been taken away. The States are made to starve. We have been

* Expunged as ordered by the Chair.

complaining. Many of the States, including Karnataka and Kerala, have been agitating in Delhi.

Sir, I don't want to speak about the Electoral Bonds. *...(Interruptions)...
Yes; I am saying, Sir.

MR. CHAIRMAN: Dr. Brittas, please speak some substance. You have lost your way. You have completely lost your way.

DR. JOHN BRITTAS: You are trying to derail me, Sir.

MR. CHAIRMAN: No. You are already derailed.

DR. JOHN BRITTAS: You are derailing me, Sir. ...(Interruptions)... I am totally intact. ...(Interruptions)...

MR. CHAIRMAN: I cannot derail you. ...(Interruptions)... You are derailing yourself. ...(Interruptions)...

DR. JOHN BRITTAS: Please, allow me, Sir.

MR. CHAIRMAN: You are venturing far away from the issues.

DR. JOHN BRITTAS: Sir, you are trying to derail me. Please, allow me.

MR. CHAIRMAN: You are trying to create a mechanism whereby you can get publicity. Talk substance. Make your contribution. We are here to make contribution.

DR. JOHN BRITTAS: Sir, even after ten years in power, you blame Mughals and Nehru for each and every matter. अब तो इमरजेंसी आ गई है। Isn't it a fact that Shri Atal Bihari Vajpayee addressed Smt. Indira Gandhi as Durga? Isn't it a fact that the other day a Minister in your Cabinet called Smt. Indira Gandhi as Mother of India? He is a sitting Minister in your Government. So, you should, actually, decide who is Indira Gandhi and Emergency. We fought against Emergency. We fight against the Congress in Kerala. We have no qualms about it.

* Expunged as ordered by the Chair.

Sir, now, I am glad that मोदी मंत्र थोड़ा फेड़ हो गया है, अब तो एनडीए के नाम पर चर्चा हो रही है। I am glad that there is a new found love for the allies here. सस्मित पात्रा जी इधर बैठे हैं। ये तो कितने ही साल उनके साथ थे। आपको खत्म कर दिया है। See the history of the BJP is to eat all its allies — AGP, etc. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: One minute.

DR. JOHN BRITTAS: What is this, Sir? Why don't you allow me to speak?

MR. CHAIRMAN: One minute, John. Why are you using the word * for Sasmit Patra?

DR. JOHN BRITTAS: Okay.

MR. CHAIRMAN: Word * is deleted.

DR. JOHN BRITTAS: Sir, you should give me some time.

MR. CHAIRMAN: No, no, you must regret. You regret using the word '**poor**'.

DR. JOHN BRITTAS: Okay, Sir.

Sir, I will just quote...*(Time-bell rings)*...Sir, you have taken away three minutes from me. I will just quote one thing. The pseudo Chowkidar guarding only hardened criminals...*(Time-bell rings)*...

MR. CHAIRMAN: Now, Shri Birendra Prasad Baishya.

MR. CHAIRMAN: Your time is over. Next, Shri Birendra Prasad Baishya. ...*(Interruptions)*...

DR. JOHN BRITTAS: Please give me some more time. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Okay, speak for half-a-minute. ...*(Interruptions)*... Go ahead. ...*(Interruptions)*...

* Expunged as ordered by the Chair.

DR. JOHN BRITTAS: Sir, the institutions are the main plank on which the democracy survives. You know what the *halat* of Election Commission is. The Election Commission had to send a notice to the security guards of the BJP Office for the violation of the code of conduct by the Prime Minister. What is the *halat* of the media? Now, people depict media as ‘god media’. No, they are on the feet of this Government. They don’t have even one-tenth of the respect and honour they had ten years back. They have been driven out from everywhere. I would request the media if you want to regain your honour as a pillar of democracy you will have to ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record now. Now, Shri Birendra Prasad Baishya. You have four minutes.

SHRI BIRENDRA PRASAD BAISHYA (Assam): Sir, please give me some extra time. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: You, at your disposal, have 3.33 minutes. I have given you four minutes. ...*(Interruptions)*...

SHRI BIRENDRA PRASAD BAISHYA: Sir, yesterday, you had given 6.5 minutes to ‘Others’. I also belong to ‘Others’ group. Please allow me some more time. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Please utilize your time. You have four minutes.

SHRI BIRENDRA PRASAD BAISHYA: I am a very obedient student. So, please give me some extra time.

Thank you very much, Sir, for allowing me to speak on the Motion of Thanks to the President’s Address. On behalf of my party, Assam Gana Parishad, and on behalf of the President of my Party, Shri Atul Bora, I rise here to support the Motion of Thanks to the Address, delivered by her Excellency, the President of India.

My party is a regional political party. We have a national outlook. Like Telugu Desam, we fought last General Elections under the umbrella of NDA, under the leadership of Shri Narendra Modi. In these elections, the people of this country have given a clear majority to our alliance. It is a clear majority because we had a pre-poll alliance, not a post-poll alliance. We fought the elections under the leadership of Shri

Narendra Modi and people gave mandate in favour of Shri Narendra Modi. And, Narendra Modi succeeded as a successful Prime Minister for the third time.

During the last ten years, India witnessed economic growth, economic stability. Everybody must remember that ten years back our economy, under the UPA Government, was at eleventh place in the world. But, within the last ten years, under the leadership of Shri Narendra Modi, our economy jumped from eleventh position to fifth position in the world. This is a significant achievement. During last ten years, our rate of economic growth has continuously been around eight per cent. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Please wind up. You are left with just one more minute. ...*(Interruptions)*...

SHRI BIRENDRA PRASAD BAISHYA: Sir, please give me some more time.

I come from the North-Eastern Region. Last ten years had been a golden period for the people of North-Eastern Region. The Government of Shri Narendra Modi, during last ten years, gave four times budgetary allocations, as compared to similar period of the preceding Governments. For the first time, semi-conductor industry is going to be established in Assam at a cost of Rs 29,000 crores. Sir, under the leadership of Shri Narendra Modi, this Government invested more than Rs.35,000/- crores for petroleum sector.

MR. CHAIRMAN: One minute, please. The House stands adjourned to meet at 11.00 a.m. on Tuesday, the 2nd July, 2024.

The House then adjourned at six of the clock till eleven of the clock on Tuesday, the 2nd July, 2024.